Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 167 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शनिवार 21 दिसम्बर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

अहिंसा रूपी देवता की आराधना ही हमारे जीवन को सफलता देने वाला है।

Only worshiping deity of nonviolence is the key to success in our life.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

आईपीएस जीपी सिंह ने ड्यूटी किया ज्वाइन

रायपुर (आरएनएस)। केंद्रीय गृह मंत्रालय के बाद राज्य के गृह मंत्रालय द्वारा बहाली आदेश जारी करने के बाद एक दिन बाद आईपीएस जीपी सिंह ने ज्वाइनिंग दे दी है.गौरतलब है कि, 1994 बैच भापुसे अफसर के आईपीएस गुरजिंदर पाल सिंह को पूर्ववर्ती सरकार के दौरान उनके खिलाफ एक्सटॉर्शन, आय से अधिक संपत्ति और राजद्रोह का मामला दर्ज कराया गया था. इसके बाद उन्हें अनिवार्य सेवानिवृत्ति देने का प्रस्ताव राज्य सरकार ने केंद्र को भेजा था. इस प्रस्ताव के बाद केंद्र ने उन्हें अनिवार्य सेवानिवृत्ति दे दी थी।

प्रदीप मिश्रा की कथा में अनियंत्रित हुई भीड़, कई महिलाएं चोटिल

मेरठ (आरएनएस)। मेरठ के शताब्दी नगर में चल रही प्रदीप मिश्रा की शिवमहापुराण के दौरान भीड़ अनियंत्रित हो गई। एंट्री गेट पर कई महिलाएं गिर पड़ीं। महिलाओं को हल्की चोटें भी आई हैं। बताया गया कि कथा का आज छठा और अंतिम दिन है। हर दिन जहां डेढ़ लाख श्रद्धालु कथा सुनने पहुंच रहे थे वहीं आज श्रद्धालुओं की संख्या ढाई लाख पहुंच गई। बताया गया कि व्यवस्था बनाने में काफी दिक्कत आई। भीतर की तरफ पंडाल पूरी तरह फुल हो गया, जबकि बाहर बड़ी संख्या में श्रद्धालु एकत्र हो गए थे। इनमें काफी संख्या में महिलाएं भी थीं। बाहर जमा श्रद्धालुओं में अफरा-तफरी का माहौल बन गया।

छत्तीसगढ़ विधानसभा का शीतकालीन सत्र

राजीव गांधी किसान न्याय योजना में राशि कम करने पर पक्ष-विपक्ष में नोंक-झोंक

छ.ग. विधानसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित

रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ विधानसभा के शीतकालीन सत्र के अंतिम दिन प्रश्नकाल के दौरान भाजपा विधायक मोतीलाल साहू ने राजीव गांधी किसान न्याय योजना की राशि में कमी का मामला उठाया. मंत्री रामविचार नेताम ने बताया कि राशि कम और ज़्यादा दी गई है. पिछली सरकार ने किसानों को छलने का काम किया. इसके साथ ही सदन में पक्ष और विपक्ष के बीच नोक-झोंक शुरू हो गई.

भाजपा विधायक मोतीलाल साहू ने सवाल किया कि 2020-21 के मुक़ाबले 2021-22 में राजीव गांधी किसान न्याय योजना के तहत किसानों को राशि कम क्यों दी गई? इस कमी का क्या कारण है? जबकि राशि बढ़नी चाहिए थी. इस पर मंत्री रामविचार नेताम ने बताया कि राशि कम और ज़्यादा दी गई है. राशि में कमी होने का प्रमुख कारण था कि सरकार ने किसानों के मेड़ का रकबा काटा और राशि घटाई. विष्णुदेव सरकार किसान हितैषी है. किसानों के बारे में बोलने का इनका मुँह नहीं है.विधायक साहू ने कहा कि किसानों की संख्या बढ़ी थी फिर भी रक़बा काटकर राशि कम दी गई थी. अटल श्रीवास्तव ने सवाल किया कि राजीव गांधी किसान न्याय योजना की आख़िरी किश्त कब देंगे? इस पर नेताम ने कहा कि एक साल के भीतर 17 हज़ार करोड़ रुपये किसानों को दिया गया है. इसीलिए ऑटो मोबाइल सेक्टर में बूम है।

660 करोड़ की रिएजेंट खरीदी की ईओडब्ल्यू करेगी जांच

छत्तीसगढ़ विधानसभा के शीतकालीन सत्र के दौरान शुक्रवार को स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने ध्यानाकर्षण के दौरान इस संबंध में घोषणा की.भाजपा विधायक धरमलाल कौशिक द्वारा सदन में रिएजेंट खरीदी की मुद्दा उठाया था, जिस पर स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने जवाब देते हुए कहा कि पिछली सरकार में सुनियोजित रूप से भ्रष्टाचार हुआ. बिना जरूरी, बिना डिमांड के रिएजेंट सप्लाई की गई. 28 करोड़ की रिएजेंट खराब हो चुकी है, और भी खराब होने की आशंका है.ऑडिट में पकड़ी गई थी गड़बड़ी भाजपा के एक वरिष्ठ नेता की ओर से मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय को सौंपे गए शिकायत पत्र में कहा गया है कि ऑफिस ऑफ द प्रिंसिपल अकाउंट जनरल ऑडिट आब्जरवेशन ने बड़ी गड़बड़ी पकड़ी थी. ऑडिट ऑब्जरवेशन 29 जनवरी 2021 से 15 मार्च 2021 तक की गई थी. इस आडिट में 193 करोड़ रुपए की खरीदी में आपत्ति जताई गई थी. ऑडिट रिपोर्ट में की गई आपत्ति के बावजूद टेंडर निरस्त नहीं किया गया. मोक्षित कारपोरेशन ने अपनी सप्लाई जारी रखी.

आदिवासी हॉस्टल में बच्चों की मौत पर सदन गरमाया

छत्तीसगढ़ विधानसभा के शीतकालीन सत्र 2024 का आज अंतिन दिन है। चौथे दिन सत्र की शुरुआत में कांग्रेस विधायक लखेश्वर बघेल ने आदिवासी हॉस्टलों में बच्चों की मौत का मामला उठाया जिसपर जवाब देते हुए मंत्री रामविचार नेताम ने कहा कि, 12 माह के भीतर 11 बच्चों की छात्रावासों में मौत हुई। सड़क दुर्घटना, बीमारी, अज्ञात कारणों से मौत हुई। कांग्रेस रूकलखेश्वर बघेल ने कहा कि, अधिकारियों ने गलत जानकारी दी हैं। आदिवासी हॉस्टलों में 25 से ज्यादा बच्चों की मौत हुई है। इस पर मंत्री नेताम ने कहा कि, जो दोषी होगा उसके खिलाफकार्रवाई करेंगे।

विधानसभा परिसर में पत्रकार के साथ विधायकों की हुई बहस

विधानसभा परिसर में शुक्रवार को कांग्रेस के विधायकों, और एक पत्रकार सुनील नामदेव की खूब बहस हुई। ये विवाद कैमरे पर रिकॉर्ड हो गया। विधानसभा में कानून व्यवस्था पर विपक्षी कांग्रेस सदस्यों ने स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी थी, और फिर सदन में हंगामे के बाद कांग्रेस सदस्य बाहर चले गए। विधानसभा परिसर में गांधी प्रतिमा के सामने प्रदर्शन किया। इसी बीच नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत, और पूर्व सीएम भूपेश बघेल से मीडिया कर्मियों ने चर्चा की। इसी बीच सवाल-जवाब के दौरान पत्रकार सुनील नामदेव की पहले भूपेश बघेल, और फिर कांग्रेस के विधायकों अटल श्रीवास्तव व अन्य के साथ बहस हुई। इसकी काफी चर्चा रही।

छ.ग. विधानसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित

छत्तीसगढ़ विधानसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित हो गया. चार सत्रों के हो-हंगामे और पक्ष-विपक्ष के बीच नोक-झोक के बीच अनेक मसलों पर चर्चा हुई. विपक्ष की मौजूदगी-गैरमौजूदगी में महत्वपूर्ण विधेयक पारित किए गए. वहीं जनता से जुड़े तमाम विषयों पर चर्चा हुई, लेकिन राजस्व मामलों से जुड़े विषयों पर सरकार ने बड़ी राहत देने की घोषणा की।

शीतकालीन सत्र के अंतिम दिन नहीं चली संसद, लोकसभा और राज्यसभा अनिश्चितकाल के लिए स्थगित

नई दिल्ली (आरएनएस)। संसद के शीतकालीन सत्र के अंतिम दिन लोकसभा में जमकर हंगामा हुआ। लोकसभा की कार्यवाही शुरू होने के बाद भाजपा और विपक्ष के सांसदों ने अंबेडकर विवाद को लेकर जमकर नारेबाजी की।हंगामे को देखते हुए लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने लोकसभा को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया है।हालांकि, अंतिम दिन लोकसभा ने %एक देश एक चुनाव% से संबंधित 2 विधेयक को संयुक्त संसदीय समिति के पास भेजने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी।

राज्यसभा में भी कार्यवाही शुरू होने के बाद हंगामा शुरू हो गया, जिसके बाद कार्यवाही को 12 बजे तक स्थगित कर दिया गया। इसके बाद कार्यवाही फिर शुरू हुई, लेकिन हंगामा नहीं थमा। इसे देखते हुए राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने राष्ट्रगीत के बाद कार्यवाही को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित करने की घोषणा की।बता दें, लोकसभा अध्यक्ष बिरला ने कार्यवाही को स्थगित करने से पहले सांसदों को संसद परिसर और गेट पर प्रदर्शन न करने की चेतावनी दी।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय से मिले विधानसभा के शैक्षणिक भ्रमण पर आये मुंगेली जिले के बच्चे

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय से छत्तीसगढ़ विधानसभा परिसर में मुंगेली जिले से विधानसभा के शैक्षणिक भ्रमण पर आये बच्चों ने मुलाकात की। मुख्यमंत्री श्री साय ने बच्चों से बहुत ही आत्मीयता से मुलाकात की और विनोदपूर्वक बच्चों से पूछा- कौन-कौन आएंगे राजनीति में। मुख्यमंत्री श्री साय का सवाल सुनकर कई बच्चों ने हाथ उठा कर राजनीति में आने की इच्छा प्रकट की। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने बच्चों को खूब मन लगाकर पढाई करने और शैक्षणिक भ्रमण के अवसर का लाभ उठाने की सीख दी। आज मुंगेली ज़िले के शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, परसिया और संस्कार विद्या मंदिर, सकेल के विद्यार्थी छत्तीसगढ़ विधानसभा के शैक्षणिक भ्रमण पर आए थे। मुख्यमंत्री श्री साय को बच्चों ने बताया कि अपने रायपुर भ्रमण के दौरान वे पुरखौती मुक्तांगन, स्वामी विवेकानंद विमानतल, मंत्रालय महानदी भवन, इंद्रावती भवन और बंजारी मंदिर का भी भ्रमण करेंगे। विधानसभा भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने विधानसभा की कार्यवाही को नजदीक से देखा और संसदीय प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त की।

सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से सपरिवार की मुलाकात

दिल्ली/रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने शुक्रवार को सपरिवार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने परिवारजनों से कुशलक्षेम जाना। साथ ही परिवार के बच्चों को दुलारा और आशीर्वाद भी दिया।

सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा कि आज नई दिल्ली प्रवास के दौरान, परिवार के सदस्यों के साथ प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह क्षण अत्यंत प्रेरणादायक और अविस्मरणीय रहा। प्रधानमंत्री जी का सादगी और दूरदर्शिता से भरा व्यक्तित्व हमेशा हमें नई ऊर्जा और मार्गदर्शन प्रदान करता है।

राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों तबादला

रायपुर (आरएनएस)। राज्य सरकार ने राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों तबादला आदेश जारी किया है। जारी आदेश के अनुसार सामान्य प्रशासन विभाग ने मंत्रालय में पदस्थ उप सचिव और अवर सचिव लेवल के अधिकारियों को इधर से उधर किया है। संयुक्त सचिव विमला नावरिया को पशुधन विकास तथा मछली पालन विभाग से हटाकर वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग में पदस्थ किया गया है। वहीं उपसचिव शैलाभ साहू को वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के अतिरिक्त प्रभार से मुक्त किया गया है। इसी प्रकार श्रीमति सूर्यकिरण तिवारी उप सचिव को श्रम विभाग से योजना आर्थिक व सांख्यिकी विभाग भेजा गया है। अभिषेक अग्रवाल उप सचिव को सामान्य प्रशासन विभाग से गृह विभाग भेजा गया है। वहीं दीपक कुमार निकुंज अवर सचिव को सामान्य प्रशासन विभाग से राजस्व व आपदा प्रबंधन विभाग की जिम्मेदारी दी गई है। श्रीमती रूचि शर्मा अवर सचिव पर्यटन व संस्कृति विभाग को वर्तमान कर्त्तव्यों के साथ साथ गृह विभाग का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। इसी प्रकार श्रीमती शिल्सी थॉमस अवर सचिव को पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग से सामान्य प्रशासन विभाग (पूल) भेजा गया है।

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला का 89 साल की उम्र में निधन

गुरुग्राम (आरएनएस)। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला का निधन हो गया है। 89 साल की उम्र में उन्होंने अंतिम सांस ली।गुरुग्राम स्थित मेदांता अस्पताल में उन्होंने दोपहर करीब 12 बजे अंतिम सांस ली। उन्हें सांस लेने में परेशानी थी और बीते कई साल से उनका इलाज चल रहा था। आज अचानक तबीयत बिगड़ने पर उन्हें दोबारा मेदांता में ले जाया गया था। वे भारत के पूर्व उप प्रधानमंत्री चौधरी देवीलाल के सबसे बड़े बेटे थे।

चौटाला का जन्म 1 जनवरी, 1935 को डबवाली के चौटाला गांव में हुआ था।2 दिसंबर, 1989 को चौटाला पहली बार मुख्यमंत्री बने थे और 22 मई, 1990 तक पद पर रहे।12 जुलाई, 1990 को चौटाला ने दूसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी, लेकिन 5 दिन बाद ही इस्तीफा देना पड़ा।22 अप्रैल 1991 को चौटाला ने तीसरी बार मुख्यमंत्री पद संभाला।जुलाई, 1999 में चौटाला चौथी और मार्च, 2000 में 5वीं बार हरियाणा के मुख्यमंत्री बने। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि प्रदेश के विकास में श्री चौटाला जी के अहम योगदान को सदैव याद किया जाएगा।

प्रधानमंत्री मोदी ने हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला के निधन पर शोक व्यक्त किया। एक्स पर अपनी एक पोस्ट में श्री मोदी ने लिखा- हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला जी के निधन से अत्यंत दुख हुआ है। प्रदेश की राजनीति में वे वर्षों तक सक्रिय रहे और चौधरी देवीलाल जी के कार्यों को आगे बढ़ाने का निरंतर प्रयास किया। शोक की इस घड़ी में उनके परिजनों और समर्थकों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं।

आईएएस सुबोध कुमार सिंह बने मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव

रायपुर (आरएनएस)। राज्य शासन ने एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक फेरबदल करते हुए सुबोध कुमार सिंह, भा.प्र.से. (1997) को प्रमुख सचिव, मुख्यमंत्री के पद पर नियुक्त किया है। सुबोध सिंह को केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति से वापस लौटने के बाद इस पद पर पदस्थ किया गया है। इस संबंध में आदेश सामान्य प्रशासन विभाग ने जारी किया है।

बता दें कि सुबोध कुमार सिंह भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के 1997 बैच के अफसर हैं। वे छत्तीसगढ़ कैडर के वरिष्ठ आईएएस हैं और रायपुर समेत प्रदेश के कई जिलों में कलेक्टर रह चुके हैं। वे हाल ही में केंद्र सरकार में स्टील मिनिस्ट्री में एडिशनल सेक्रेटरी और वित्तीय सलाहकार के पद पर थे। राज्य सरकार के अनुरोध पर वे छत्तीसगढ़ लौटे हैं और अब उन्हें राज्य सरकार ने मुख्यमंत्री का प्रमुख सचिव बनाया है।

विकसित भारत बनाने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार की भूमिका महत्वपूर्ण : राज्यपाल रमेन डेका

भौतिक विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय अकादमी के 31 वें सम्मेलन में शामिल हुए राज्यपाल

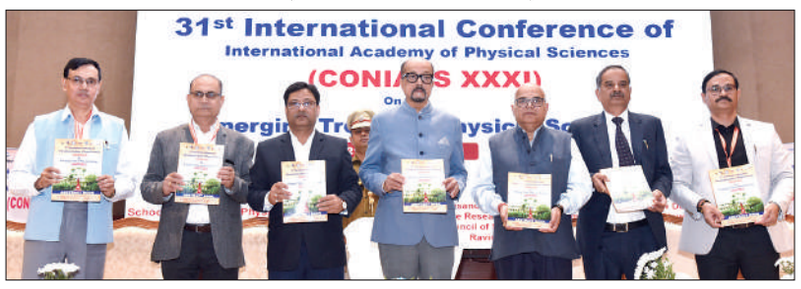

रायपुर (विश्व परिवार)। भारत सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाओं में एक है और 5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर है। ऐसे दौर में वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार की भूमिका को कम नही आंका जा सकता। जब हम तेजी से तकनीकी प्रगति और वैश्विक चुनौतियों के दौर में आगे बढ रहे है तो भौतिक विज्ञान पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। यह विचार राज्यपाल श्री रमेन डेका ने भौतिक विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय अकादमी के 31 वें सम्मेलन को संबोधित करते हुए व्यक्त किया।

पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि राज्यपाल श्री रमेन डेका ने अपने उदबोधन में कहा कि दुनिया आज महत्वपूर्ण पर्यावरणीय, तकनीकी और सामाजिक चुनौतियों से जूझ रही है। इस सम्मेलन में भाग लेने वाले वैज्ञानिक समुदाय में महत्वपूर्ण प्रभाव डालने की क्षमता रखते है। वे अत्याधुनिक शोध के माध्यम से इन वैश्विक मुद्दों को हल करने में हमारी मदद कर सकते है।

श्री डेका ने कहा कि सम्मेलन का विषय भौतिक विज्ञान में उभरते रूझान इस उभरते क्षेत्र में अपने ज्ञान पर चर्चा करने और उसे बढ़ाने के लिए शोधकर्ताओं को एक साथ लाकर वैज्ञानिक जांच और नवाचार के लिए सामूहिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि भौतिकी, रसायन विज्ञान, गणित, सांख्यिकी, कम्प्यूटर विज्ञान और जैव सूचना विज्ञान सहित विभिन्न विषयों के वैज्ञानिक इस सम्मेलन में एक साथ है।

राज्यपाल ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारत की शिक्षा पारिस्थितिक तंत्र को बदलने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण रखा है। यह अनुसंधान नवाचार और आलोचनात्मक सोच के महत्व पर जोर देता है। यह सम्मेलन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में प्रेरक का काम करेगी। सम्मेलन युवा और नवोदित वैज्ञानिकों को यंग साइंटिस्ट अवार्ड के माध्यम से अपने संभावित शोध को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान कर रहा है। स्नातकोत्तर छात्रों को शामिल करना और उनकी पोस्टर प्रस्तुतियां इस दिशा में एक सराहनीय पहल है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि ज्ञान, विचारों और अनुभवों को साझा करने के साथ-साथ महत्वपूर्ण शोध और अभिनव समाधानों के लिए यह सम्मेलन उत्प्रेरक सिद्ध होगा।

इस अवसर पर स्वागत भाषण रविशंकर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सच्चिदानंद ने दिया। प्रोफेसर कल्लोल घोष ने सम्मेलन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। भौतिक विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय अकादमी के अध्यक्ष प्रोफेसर एच.एस धामी और केन्द्रीय विश्वविद्यालय हरियाणा के कुलपति प्रोफेसर टंकेश्वर प्रसाद ने सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर शब्दकोश का विमोचन किया गया। राज्यपाल श्री डेका ने पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के एनालॉटिकल इंस्ट्रूमेंट लेबोरेटरी और नवप्रवर्तन प्रौद्योगिकी और उद्यमिता फाउंडेशन का उद्घाटन किया।

खाद्य मंत्री की अध्यक्षता में मंत्रि-मंडलीय उप समिति की बैठक, धान खरीदी के साथ ही धान के उठाव में तेजी लाने के निर्देश

- **अब तक 63.14 लाख मीट्रिक टन धान की हो चुकी है खरीदी**
- **धान खरीदी के एवज में 13.19 लाख किसानों को 14059 करोड़ रूपए का भुगतान हो चुका है**

रायपुर (विश्व परिवार)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री दयाल बघेल की अध्यक्षता में आज छत्तीसगढ विधानसभा स्थित मुख्य समिति कक्ष में मंत्री मंडलीय उप समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में धान खरीदी व्यवस्था सहित कस्टम मिलिंग के लिए धान का उठाव, किसानों के लिए पर्याप्त बारदाने की व्यवस्था, टोकन की स्थिति सहित विभिन्न किसान हित से जुड़े मुद्दे की समीक्षा की गई। बैठक में धान खरीदी के साथ-साथ कस्टम मिलिंग के लिए धान के उठाव में तेजी लाने के निर्देश दिए गए। साथ ही किसानों को विक्रय में सहुलियत प्रदान करने के लिए सभी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा गया।

बैठक में मंत्री-मंडलीय उप समिति के सदस्य कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री श्री रामविचार नेताम, वन एवं जलवायु परिवर्तन तथा सहकारिता मंत्री श्री केदार कश्यप, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा 20 सूत्रीय कार्यान्वयन मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल और राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री श्री टंक राम वर्मा शामिल हुए।

खाद्य मंत्री श्री दयाल दास बघेल की अध्यक्षता में हुई बैठक में प्रदेश के किसानों से सुगमता पूर्वक धान खरीदने के लिए सभी आवश्यक सुविधाओं को सुदृढ़ करने पर भी चर्चा की गई। बैठक में धान खरीदी सुव्यस्थित हो तथा किसानों को सरलता के साथ बारदाना उपलब्ध हो इसके लिए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। बैठक में धान उठाव और कस्टम मिलिंग, केन्द्रीय पूल और छत्तीसगढ़ नागरिक आपूर्ति निगम में चावल जमा कराने तथा परिवहन के संबंध में भी विस्तार पूर्वक चर्चा की गई।

गौरतलब है कि छत्तीसगढ़ में पिछले वर्ष समर्थन मूल्य पर रिकॉर्ड 144.92 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी हुई थी। वर्तमान में राज्य में 2058 सहकारी समितियां तथा 2739 धान उपार्जन केन्द्रों के माध्यम से आगामी खरीफ विपणन वर्ष में 160 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी का अनुमान लगाया गया है।

बैठक में खाद्य विभाग के अधिकारियों ने बताया कि 14 नवम्बर 2024 से शुरू हुए धान खरीदी महाअभियान के तहत अब तक 63.14 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी हो चुकी है। धान खरीदी के एवज में राज्य 13.19 लाख किसानों को बैंक लिकिंग व्यवस्था के तहत 14058 करोड़ रूपए का भुगतान किया जा चुका है। धान खरीदी के साथ-साथ कस्टम मिलिंग के लिए धान का उठाव जारी है। धान के उठाव में तेजी लाने के प्रदेश के सभी कलेक्टरों को निर्देशित किए गए हैं। अब तक कुल धान खरीदी का 50 प्रतिशत से अधिक धान के उठाव के लिए डिओ और टीओ जारी कर दिया गया है। जिसके विरूद्ध मिलर्स द्वारा अब तक लगभग 10 लाख मीट्रिक टन धान का उठाव हो चुका है।

कोच्चुवेली-कोरबा-कोच्चुवेली एक्सप्रेस में एक अतिरिक्त जनरल कोच की सुविधा, यात्रियों को मिलेगी सुगम एवं बेहतर यात्रा सुविधा

रायपुर (विश्व परिवार)। रेलवे प्रशासन द्वारा यात्री सुविधाओं में निरंतर वृद्धि करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। इसी क्रम में रेलवे प्रशासन द्वारा यात्रियों की बेहतर यात्रा सुविधा हेतु गाड़ी संख्या 22648/22647 कोच्चुवेली-कोरबा-कोच्चुवेली एक्सप्रेस में 01 जनरल कोच की सुविधा स्थायी रूप से उपलब्ध कराई जा रही है। यह सुविधा गाड़ी संख्या 22648 कोच्चुवेली-कोरबा में 19 दिसम्बर 2024 से तथा गाड़ी संख्या 22647 कोरबा-कोच्चुवेली एक्सप्रेस में 21 दिसम्बर 2024 से उपलब्ध रहेगी। इस अतिरिक्त जनरल कोच के जुडने से इस गाड़ी में 04 जनरल कोच की सुविधा उपलब्ध हो जाएगी। इससे ज्यादा से ज्यादा यात्रियों को जनरल कोच में यात्रा करने की सुविधा मिलेगी। साथ ही सामान्य कोच में यात्रियों की भीड़ का दबाव कम होगा और यात्रीगण सुगम एवं आरामदायक यात्रा कर सुखद अनुभव प्राप्त कर सकेंगे।

कार्यालय नगर पंचायत बिश्रामपुर, जिला-सूरजपुर (छ.ग.)

फोन नं. 07775-265344 फैक्स नं. 07775-265344 ई-मेल - / nagarpanchayatbishrampur@yahoo.in

क्रमांक / 716 / न.पं. / 2024-25 बिश्रामपुर, दिनांक-20/12/2024

ई-प्रोक्योरमेंट निविदा आमंत्रण सूचना

नगर पंचायत बिश्रामपुर, जिला-सूरजपुर (छ0ग0) द्वारा एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु ऑनलाईन (Online) निविदा ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल https://eproc.cgstate.gov.in में आमंत्रित की जाती है

सिस्टम टेंडर क्रमांक	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (रू. लाख में)	निविदा दर प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि
163196	Rennovation & Repairing work public/ community Tiolet under sbm	20.520	13/01/2025

उपरोक्त निर्माण कार्यों की विस्तृत जानकारी हेतु ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल https://eproc.cgstate.gov.in में एवं कार्यालयीन समय पर नगर पंचायत बिश्रामपुर कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पंचायत बिश्रामपुर
जिला-सूरजपुर (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कम्पनी लिमिटेड

(छ0रा0वि0मं0की उत्तरवर्ती कम्पनी) (छ0ग0 शासन का एक उपक्रम) कार्यालय- कार्यपालन अभियंता (सिविल) संभाग बिलासपुर

क्रमांकः-का.अ.सि./वित./संभाग/क्रय/1592 बिलासपुर, दिनांक 16.12.2024

निविदा सूचना

सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित कार्यों हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है :-

क्र.	निविदा विशेषीकरण क्रमांक	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत जीएसटी सहित (रूपए लाख में)	कार्यावधि	अमानत राशि	निविदा क्रय करने की तिथि एवं समय	निविदा जमा/खुलने की तिथि एवं समय
01	EEC/Dist/Bsp/ W/24-25/36	Hiring of 01 No. vehicle SUV (earlier jeep) category for the use of E.E. (Civil) division CSPDCL Bilaspur	704200/-	12 Months	7050/-	07.01.2025 04:00 PM	08.01.2025 04:15 PM

नोट- कुल सरल क्रमांक 1 प्रकाश हेतु।
1.उक्त कार्य की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी कार्यालयीन अवधि में कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है। साथ ही यह जानकारी विभागीय वेबसाईट www.cspdcl.co.in से भी डाउनलोड की जा सकती है।2.शुद्धिपत्र/निरस्तीकरण/समयावृद्धि की जानकारी कंपनी के ऊपर उल्लेखित वेबसाईट एवं कार्यालय के सूचनापटल पर देखी जा सकती है।

स्वहित एवं राष्ट्रहित में ऊर्जा बचाऐं

कार्यपालन अभियंता (सिविल) संभाग,
छ.स्टे.पा.डि.कं.लि., बिलासपुर

SAMVAD- 42517/ 3

कार्यालय नगर पालिक निगम, जोन क्र. 06, रायपुर (छ.ग.)

-:: निविदा आमंत्रण सूचना :-

क्रमांक 66/न.पा.नि./जोन क्रमांक - 06 / 2024 - 25 रायपुर दिनांक 19/12/2024

नगर पालिक निगम, रायपुर जोन क्रमाक 06 द्वारा निम्न कार्य हेतु निर्धारित SOR (निविदा दिनांक एवं संशोधित दिनांक) पर लोक कर्म विभाग में पंजीयन ठेकेदारों (ई - रजिस्ट्रेशन डी एवं उससे ऊपर) / फर्म एवं संस्था एजेंसी से दो लिफाफा पद्धति के अनुसार लिफाफा "अ" में निविदा से संबंधित आवश्यक दस्तावेज एवं "ब" में निविदा प्रपत्र सील बंद निविदा पृथक - पृथक आमंत्रित की जाती है।

संबंधित कार्य का निविदा प्रपत्र प्राप्त करने हेतु दिनांक 02/01/2025 तक निर्धारित राशि सहित आवेदन कार्यालयीन अवधि में जमा किया जा कर निविदा प्रपत्र प्राप्त किया जा सकता है। निविदा प्रपत्र एवं निविदा हेतु आवश्यक दस्तावेज दिनांक 09/01/2025 तक पंजीकृत डॉक स्पीड पोस्ट के माध्यम से सायं 5.00 बजे तक अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्राप्त होना अनिवार्य है। प्राप्त निविदायें दिनांक 10/01/2025 को सुबह 11:30 बजे उपस्थित निविदाकारों अथवा उनके अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोली जावेगी। निविदा आमंत्रित कार्य का विवरण निम्नानुसार है -

क्र.	कार्य का विवरण	निविदा का प्रकार	मद का नाम	अगणित राशि (लाख में)	अमानती राशि	निविदा प्रपत्र मूल्य	एस.ओ.आर.	समय अवधि
1	महामया मंदिर वार्ड क्र. 65 अंतर्गत सामुदायिक भवन निर्माण (डॉ. राधा बाई नवीन कन्या महाविद्यालय के पास) शीतला मंदिर के पास मठपारा रायपुर का कार्य।	प्रथम	प्रभारी मंत्री निधि	10.00	7500.00	750.00	FWD Buiding SOR 01.01.2015	05 माह

कार्य के निविदा हेतु संलग्न की जाने वाली आवश्यक दस्तावेज निम्नानुसार है :-

लिफाफा "अ" में
(1) आयुक्त नगर पालिक निगम रायपुर के नाम से देय अमानती राशि का एफ.डी.आर (निविदा खोलने तिथि तक वैद्य होना चाहिए) मूलप्रति ।
(2) प्रस्तुत दस्तावेजों की सत्यता एवं काली सूची में न होने बाबत् शपथ पत्र संलग्न करें।
(3)फर्म एजेंसी के नाम का वैद्य पंजीयन की प्रति
(4) बैंक साल्वेंसी की प्रति (5) जी.एस.टी. पंजीयन की प्रति (6) 3 वर्षों का ITR एवं निविदा तिथि से 3 माह पूर्व का GSTR की प्रति।
लिफाफा "ब" में
(1) निविदा प्रपत्र

शर्तें:- (1) उक्त लिफाफे रजिस्टर्ड डॉक / स्पीड पोस्ट से स्वीकार की जावेगी। (2) निविदा प्रपत्र प्राप्त करने तिथि में अवकाश होने पर आगामी तिथि को प्राप्त की जा सकती है एवं निविदा जमा करने एवं खोलने के तिथि में अवकाश हो जाने पर आगामी कार्यालयीन दिवस में कार्य संपादित की जावेगी। (3) ठेकेदार / फर्म एवं संस्था के द्वारा अंतिम भुगतान से पूर्व जी.एस.टी.विभाग से बकाया न होने संबंधी प्रमाण पत्र (Tax Clearance Certificate) अथवा पूर्ण देय कर जमा किए जाने का प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया जाना होगा।

घरो से निकलने वाले सूखा और गीला कचरे को सफाई मित्र (वाहन) कों देवें।

जोन कमिश्नर
जोन क्रमांक - 06
नगर पालिक निगम, रायपुर

छत्तीसगढ़ स्टेट पावर ट्रांसमिशन कंपनी लिमिटेड

(छत्तीसगढ़ शासन का एक उपक्रम) CIN - U40108CT2003SGC015820 GSTN-22AADCC5773E1ZX
कार्यालय कार्यपालन यंत्री, उपकेन्द्र संभाग, छ.ग.स्टेट पॉवर ट्रांस.कं.लिमि.,भिलाई पता-पॉवर कंपनी परिसर, जी.ई.रोड भिलाई (छत्तीसगढ़) पिन -490021
वेबसाईट :- www.cspc.co.in ई-मेल eesstrans.bhilai@cspc.co.in टेलीफोन नं :- 0788-2281283 फैक्स नं. 0788-2281283

क्रमांकः10-72/क्रय/1805 भिलाई, दिनांक : 19/12/2024

:: निविदा आमंत्रण सूचना ::

टाटा योद्धा (डबल-केबिन)/महिन्द्रा बोलेरो केम्पर (1.0-1.5 टन क्षमता) माल वाहक श्रेणी अथवा समकक्ष वाहन के अस्थाई अल्पकालीन अनुबंध हेतु

कार्यपालन अभियंता (उपकेन्द्र संभाग) भिलाई के उपकेन्द्रों के कार्यों के लिये वाहन चालक सहित एक नग टाटा योद्धा (डबल-केबिन)/महिन्द्रा बोलेरो केम्पर (1.0-1.5 टन क्षमता) माल वाहक श्रेणी अथवा समकक्ष वाहन के अस्थाई अल्पकालीन अनुबंध (2 वर्ष) हेतु पंजीकृत/उपयुक्त ठेकेदारों से मुहरबंद निविदायें आमंत्रित की जाती है।

क्रं.	कार्य का विवरण	आवश्यक संख्या	निविदा प्रपत्र क्रय करने की अंतिम तिथि व समय	निविदा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि व समय	निविदाओं को खोलने की निर्धारित तिथि व समय
1.	कार्यपालन यंत्री उपकेन्द्र संभाग, छ.स्टे.पॉ.ट्रान्स.कं.लिमि., भिलाई के अधीनस्थ सहायक अभियंता 132 के0व्ही0 उपकेन्द्र भिलाई के अंतर्गत आने वाले कार्य क्षेत्रों के कार्य के लिये 01 नग टाटा योद्धा (डबल-केबिन) / महिन्द्रा बोलेरो केम्पर (क्षमता 1.0-1.5 टन) अथवा समकक्ष मालवाहक वाहन के अस्थाई अल्पकालीन अनुबंध (2 वर्ष) हेतु	01 नग	दिनांक 08.01.25 समय 17:00 बजे तक	दिनांक 09.01.25 समय 15:00 बजे तक	दिनांक 09.01.25 समय 17:30 बजे तक

उपरोक्त कार्य की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा, विज्ञप्ति समयावधि विस्तार संबंधित जानकारी व अन्य जानकारी विभागीय वेबसाईट http://cspc.co.in से डाउनलोड की जा सकती है।

स्वहित एवं राष्ट्रहित में ऊर्जा बचाऐं

कार्यपालन अभियंता
उपकेन्द्र संभाग छ.रा.पॉ.ट्रान्स.कं.लिमि. भिलाई

SAMVAD- 42520/ 2

आम सूचना

मैं **श्रीमती ज्योति शुक्ला निवासी रोहिणीपुरम कॉलोनी, रूद्र भवन, रायपुर** आम जनता को यह सूचित करती हूं कि **ग्राम कुम्हारी (चिखली) तहसील धरसींवा, जिला रायपुर (छ.ग.) के ख. नं. - 138 / 1 एवं 139 / 1 कुल रकबा - 0.566 हेक्टेयर** पर मिट्टी उत्खनन खदान (गौण खनिज) क्षमता - 1000 घन मीटर (ईट उत्पादन इकाई 5,00,000 नग) प्रति वर्ष के लिये राज्य स्तरीय पर्यावरण प्रभाव आकलन प्राधिकरण, छत्तीसगढ़ के द्वारा जारी पत्र क्रमांक 1168/एस.ई.आई.ए.ए.छ.ग.। बिक्र। 181 नवा रायपुर अटल नगर **दिनांक 23/10/2024** के माध्यम से पर्यावरणीय स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। पर्यावरण स्वीकृति पत्र में दी गई शर्तो के पालनार्थ उक्त सूचना का प्रकाशन किया जा रहा है।

श्रीमती ज्योति शुक्ला
रोहिणीपुरम कॉलोनी, रूद्र भवन
रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)

संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./16452/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16452
वार्ड का नाम- 04 - यतियतन लाल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 04 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR104J0008F** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **ISHWARI PRASAD DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O SUKHDEV RAM DEWANGAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती आरती धनवानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति - श्री रमेश धनवानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)

संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./16611/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16611
वार्ड का नाम- 04 - यतियतन लाल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 04 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR104E00220** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **JAGANNATH TIMBER, CHANDU PATEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O KHMIJI BHAI PATEL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. दिनेश पटेल 2. निलेश पटेल 3. आशीष पटेल 4. श्रीमती भूमिका पटेल 5 श्रीमती सविता प्टेल** पिता/पति, श्री/श्रीमती **1 पिता - स्व अर्जुन भाई पटेल, 2 श्री दिनेश पटेल, 3 दिनेश पटेल, 4 पति - पियुष पटेल, 5. पति - दिनेश पटेल** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)

संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./16612/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16612
वार्ड का नाम- 04 - यतियतन लाल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 04 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR104A0400A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **INDIRA TIMBER MARKET BHANPURI ARJUN BHAI PATEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MEGH JI BHAI PATEL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. धीरज भाई पटेल 2. दिनेश भाई पटेल 3. भरत भाई पटेल** पिता/पति, श्री/श्रीमती **तीनों पिता - श्री अर्जुन भाई पटेल** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृ दानपत्र** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)

शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./16637/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16637
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 30 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR331D00029** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **P.N. SUNDARAM** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O LATE. P.A. NARAYAN** केनाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. GODAVARI SAHU** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O YASHWANT RAM SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/ प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/ आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)

शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./16721/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16721
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227S00233** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PAWAN NIMJE** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O PUNDLIK KISAN NIMJE** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ANUPAM SINGH** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O VIPIN KUMAR SINGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)

शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./16722/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16722
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 30 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR33F0002** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **AMALENDU SEN** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O LATE AVINASH CHANDRA SEN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री सागर सेन** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता - स्व. श्री अमलेन्दु सेन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,

सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल द्वारा कबीर नगर कालोनी, रायपुर में निर्मित **ई. डब्ल्यू.एस. भवन योजना** के अंतर्गत भवनों में से भवन क्रमांक **ई. डब्ल्यू. एस. - 242 श्रीमती प्रीति मिश्रा पति श्री स्व. राजेश मिश्रा** को भाड़ाक्रय/पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा **दिनांक 22-9-17** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के विक्रय हेतु **दिनांक 22.9.2024** को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन **श्रीमती प्रेमादेवी पति श्री जय नारायण शुक्ला** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की है।

अतः किसी भी व्यक्ति शासकीय / अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड / भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिन के अंदर समक्ष उपस्थित होकर आपित्त प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,

सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल द्वारा कबीर नगर फेस -2, कालोनी रायपुर में निर्मित **MIG - डीलक्स** भवन योजना के अंतर्गत भवनों में से **भवन क्रमांक MIG - - डीलक्स - 75, श्रीमती संजीता पाल पति श्री अमिताभ पाल** को भाड़ाक्रय/पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा **दिनांक 02-08-2011** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के विक्रय हेतु **दिनांक 10/11/2023** को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन **श्रीमती प्राची अग्रवाल सिन्हा पति श्री संजय कुमार सिन्हा** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की है।

अतः किसी भी व्यक्ति शासकीय / अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड / भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिन के अंदर समक्ष उपस्थित होकर आपित्त प्रस्तुत करें । अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)

मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /16820/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16820
वार्ड का नाम- 01 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 01 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801L01601** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **S.B MULTIMEDIA PRIVATE LIMITED ,DIR- ANAND GOYAL S/O HARIRAM GOYAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती ... के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **BAJRANG DEVCON PRIVATE LIMITED DIR- RAJENDRA GOYAL S/O LT. HARIRAM GOYAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **....** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)

मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /16686/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16686
वार्ड का नाम- 01 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 01 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801L00965** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **NAVEEN SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **UDAY NARAYAN SINGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MENKA KIRAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BHIMSEN KIRAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)

मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /16753/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16753
वार्ड का नाम- 01 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 01 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801O00107** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DEVENDRA SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **AJIT SINGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SUDHIR SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LT. RAM SINGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)

मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /16662/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16662
वार्ड का नाम- 01 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 01 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801L01204** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MANOJ MASAND** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SAJAN DAS** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **GURPREET SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LT. PARAMJEET SINGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)

मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /16660/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 16-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16660
वार्ड का नाम- 01 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 01 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801O00220** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **UNIVARTH INDIA LIMITED** पिता/पति, श्री/श्रीमती **...** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1.SUJATA KUMARI W/O SHANU KUMAR 2. SHANU KUMAR S/O VIJAY KUMAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **...** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)

आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./16765/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16765
वार्ड का नाम- 65 - महामाया मंदिर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 65 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR662I00281** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MANOJ KUMAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SHRICHAND VIRANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MAMTA SINGH BAIS** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O SURYA PRATAP SINGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,

सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि दीनदयाल आवास योजनांतर्गत **सड्डू, रायपुर** में स्थित **एल.आई.जी. भवन क्रमांक-170, सुश्री नेहा खरे पिता श्री सी. पी. खरे** के नाम से आबंटित है, आबंटी द्वारा उक्त भवन की लीजडीड **दिनांक 02/08/2007** पंजीकृत कराने के उपरांत भवन की पूर्ण राशि जमा कर आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया है, वर्तमान में आबंटी **श्रीमती नेहा खरे पिता श्री चन्द्रिका प्रसाद खरे, पति श्री परितोष निगम निवासी टी.वी. टॉवर रोड कचना, रायपुर तहसील व जिला रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा उक्त भवन को क्रेता **(1) सुश्री गीतांजली सेन पिता श्री भगवती प्रसाद सेन एवं (2) श्रीमती ईश्वरी सेन पति श्री भगवती प्रसाद सेन दोनो निवासी- म.नं.-531/5, प्रेम नगर, मोवा, सड्डू, रायपुर तहसील व जिला रायपुर (छ.ग.)** के नाम से विक्रय करने के लिये इस कार्यालय में अपना आवेदन एवं विकय इकरारनामा, शपथ पत्र प्रस्तुत कर अनापत्ति प्रमाण पत्र (NOC) की मांग की गई है।

अतः उक्त भवन के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति, शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक, अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,

सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राज. परि., नवा रायपुर प्रथम एवं पंचम तल व्यवसायिक परिसर (दक्षिण पूर्व कार्नर) सेक्टर-27 नवा रायपुर, अटल नगर
फोन नं.-0771-4016094
E-mail id:- em_zone2@yahoo.com

// आम-सूचना //

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि मण्डल द्वारा निर्मित अटल आवास योजना बेलभाठा, अभनपुर, रायपुर, में **ई.डब्ल्यू.एस स्वतंत्र भवन क्रमांक-401, श्रीमति मेनका गौतम पति श्री चुनु सिंह गौतम,** के नाम स्ववित्तीय आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा उक्त भवन के मद मे पूर्ण राशि जमा कर पंजीयन कार्यालय अभनपुर से **दिनांक 01.01.2010** को लीजडीड (पट्टा विलेख) का निष्पादन करा कर आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया है। वर्तमान में **श्रीमति मेनका गौतम पति श्री चुनु सिंह गौतम, निवासीः मकान नं.-386, लंकापारा बजरंग चौक, हसदा, तहसील अभनपुर, जिला रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा उक्त भवन को श्रीमति वंदना साहू पति श्री टिकेश्वर साहू, निवासीः- सोनेसिल्ली, तहसील- गोबरा नवापारा, जिला- रायपुर (छ.ग.) को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी) प्रदाय करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः अटल आवास योजना बेलभाठा, अभनपुर, रायपुर, में ई.डब्ल्यू.एस स्वतंत्र भवन **क्रमांक-401,** के विक्रय के सबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक, अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अद्योहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना
नवा रायपुर, अटल नगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर शनिवार 21 दिसंबर 2024

ग्रामीणों द्वारा कोयला परिवहन 5 दिनों से ठप समझौते के बाद आज से प्रारंभ

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- पाँच दोनों से बंद कोयला परिवहन ग्रामीण वासियों ट्रांसपोर्टर प्रतिनिधियों , कॉलरी की अधिकारियों एवं एसडीम की संयुक्त बैठक में आपसी समझौते से कोयला परिवहन आज से चालू कर दिया गया।

जानकारी के अनुसार ग्रामीणों ने कोयला परिवहन से सड़क की क्षतिग्रस्त एवं डस्ट से परेशान होकर कोयला परिवहन ठप कर दिया जिससे प्रतिदिन 4:30 टन कोयला का परिवहन प्रतिदिन नहीं हो पा रहा था कोयला परिवहन में लगभग 50 गाड़ियां निरंतर जगन्नाथ पुरी से कोयला का उठाव कर करंजी रेलवे सेटिंग सीडिंग ऑन रेडिंग करती थी अनलोडिंग करती थी जो पिछले 5 दिनों से पूर्णता ठप था। आज पांचवे दिन सूरजपुर एसडीएम शिवानी जायसवाल व तहसीलदार के पहल पर करंजी रेलवे साइडिंग में कोयला का परिवहन चालू हो सका। परिवहन ठेकेदार एवं ग्रामीण प्रतिनिधियों के बीच सड़क के रखरखाव एवं मरम्मत करने का मांग पर एस डी एम सूरजपुर शिवानी जायसवाल व नायब तहसिलदार समीर शर्मा के आश्वासन पर सडक के बीचों बीच लगा बैरियर हटवाया गया जिससे परिवहन में लगी ट्रेलर गाडियों को निकाला गया.

कोयला परिवहन मार्ग पर पानी के छिडकाव की व्यवस्था की गई, छोटे मोटे गडढे भरने का काम शुरू कर दिया गया.

नो इंट्री व्यवस्था विद्यालय या सरकारी अवकाश के दिन लागू नहीं होने की शर्त पर दोनों पक्षों के बीच सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए गए व कोल परिवहन निर्बाध गति से हो चालू हुआ।

इस कार्य में ट्रासपोर्टर ठेकेदार प्रतिनिधि संजीत सिंह, सोमू सिंह व ट्रेलर मालिक संध के प्रतिनिधि समीर सिंह एवं ग्रामीण प्रतिनिधि एवं भाजपा नेता रामानंद जायसवाल का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

उधर एस ई सी एल भटगांव क्षेत्र के महाप्रबंधक संचालन आमिर कुमार झा तथा वरिष्ठ अधिकारियों ने सीएसआर मद से इस वित्तीय वर्ष में दस मीटर चौडी सड़क निर्माण के लिए कागजी कार्रवाई मुख्यालय को प्रेषित की ।

50 गाड़ियों से 4500 टन कोयला का होता है परिवहन, भारी भरकम वाहनों से क्षतिग्रस्त हो जाती है सड़क

सूत्र बताते हैं कि एस ई सी एल भटगांव के जगन्नाथ पुरी खदान से प्रतिदिन 50 गाड़ियों के माध्यम से 4500 टन कोयला का परिवहन प्रतिदिन होता है तब जाकर मालगाड़ी का एक रैक भरता है । पिछले 5 दिनों से कोयला का परिवहन न होने से वाहन चालकों का रोजी-रोटी बंद ,राजस्व का नुकसान, एस ई सी एल कंपनी का नुकसान, वाहन चालकों का नुकसान, वाहन मालिको का नुकसान, राज्य सरकार को राजस्व का नुकसान हो रहा था ।प्रबंधन को चाहिए कि कोयला परिवहन से क्षत्रि ग्रस्त सड़कों का निरंतर मरम्मत का कार्य हो सके ताकि ग्रामीणों की कोई परेशानी न हो, कोई सड़क दुर्घटना न हो तथा न कंपनी को नुकसान हो न राज्य शासन की रियलिटी का नुकसान हो इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

संक्षिप्त समाचार

गाय को मारने चढ़ा दी गाड़ी, गिरफ्तार

कवधा(विश्व परिवार)। दिनांक 18/12/2024 को प्रार्थी ने थाना उपस्थित होकर रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह ग्राम सिंगारपुर में रिश्तेदारी में आया था। दोपहर 12:30 बजे अपनी मोटर साइकिल को ईश्वर साहू के घर के सामने खड़ा कर घर में प्रवेश कर रहा था। उसी समय ग्राम सिल्हाटी की ओर से आ रहे माजदा के चालक ने तेजी और लापरवाही से वाहन चलाते हुए प्रार्थी की मोटर साइकिल को ठोकर मार दी। इसके साथ ही चालक ने रोड किनारे खुटे में बंधी ईश्वर साहू की गाय को जानबूझकर वाहन से कुचल दिया, जिससे गाय की मौके पर ही मृत्यु हो गई। मामले की गंभीरता को देखते हुए थाना स. लोहरा में अपराध क्रमांक 347/24 दर्ज किया गया। आरोपी के खिलाफ निम्नलिखित धाराओं के तहत अपराध पंजीबद्ध किया गया: पशुओं के प्रति क्रूरता का निवारण अधिनियम, 1960: धारा 11(2) विवेचना के दौरान, वाहन चालक गौरव सोनवानी पिता अरुण सोनवानी (उम्र 27 वर्ष), निवासी खैरी, थाना कमलेश्वर, जिला नागपुर, महाराष्ट्र को गिरफ्तार किया गया। आरोपी को न्यायालय में न्यायिक रिमांड पर पेश किया गया। पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह (भा.पु.से.) के मार्गदर्शन में एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पुष्पेंद्र बघेल व पंकज पटेल तथा पुलिस अनुविभागीय अधिकारी कृष्ण कुमार चंद्राकर के निर्देशन में थाना प्रभारी लालमन साव द्वारा लगातार अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई की जा रही है। पुलिस प्रशासन सभी नागरिकों से अपील करता है कि वे किसी भी प्रकार की आपराधिक गतिविधि की जानकारी तुरंत नजदीकी थाना को दें।

देशी मसाला शराब के साथ युवक गिरफ्तार

करहीबाजार(विश्व परिवार)। आपरेशन विश्वास के तहत पुलिस चौकी करहीबाजार द्वारा अवैध रूप से शराब बेचने वालों आरोपियों की धरपकड़ कार्यवाही लगातार जारी है। इसी क्रम में आज दिनांक 19.12.2024 को पुलिस चौकी करहीबाजार द्वारा घेराबंदी कर आरोपी भुनेश्वर कुमार ध्रुव को आरोपी के घर बाड़ी में अवैध रूप से देशी मशाला शराब बिक्री करते हुए गिरफ्तार किया गया। आरोपी के कब्जे से एक काला रंग के पिट्ठू बेग अंदर रखें 35 पाव देशी मशाला शराब कुल 6.300 बल्क लीटर देशी मसाला शराब एवं बिक्री रकम ?220 कीमती कुल ?4070 को जप्त किया गया। आरोपी के विरूद्ध पुलिस चौकी करहीबाजार थाना सिटी कोतवाली में धारा 34(2) आबकारी एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया।

ग्राम पंचायत मोहगांव में हेलमेट वितरण कार्यक्रम और साइबर सुरक्षा जागरूकता अभियान

कवर्धा(विश्व परिवार)। कबीरधाम जिले के ग्राम पंचायत मोहगांव में आज हेलमेट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 100 नागरिकों को नि:शुल्क हेलमेट वितरित किए गए। इस कार्यक्रम में कबीरधाम पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे और उन्होंने नागरिकों को हेलमेट प्रदान किया। कार्यक्रम का आयोजन समाजसेवी विष्णु चंद्रवंशी के विशेष सहयोग से किया गया, जिन्होंने क्षेत्र के अन्य गांवों के नागरिकों को भी इस पहल का लाभ दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सड़क सुरक्षा को बढ़ावा देना और हेलमेट पहनने के महत्व को नागरिकों तक पहुंचाना था। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह ने अपने संबोधन में नागरिकों को साइबर अपराधों के प्रति सतर्क रहने की अपील की। उन्होंने कहा कि साइबर अपराधों में भारी वृद्धि हो रही है, जिसका मुख्य कारण लालच है। नागरिकों से आग्रह किया गया कि वे अपनी व्यक्तिगत जानकारी साझा करने में सावधानी बरतें और अज्ञात स्रोतों से प्राप्त किसी भी लिंक पर क्लिक करने से बचें। एसडीओपी बोडला अखिलेश कौशिक ने साइबर सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला और नागरिकों को साइबर अपराधों से बचने के उपाय बताए। उन्होंने साइबर फ्रॉड के सामान्य संकेतों के बारे में जानकारी दी और इससे बचाव के लिए जागरूकता बढ़ाने पर जोर दिया। यातायात प्रभारी प्रवीण खलखो और थाना प्रभारी पांडातराई ने भी नागरिकों को यातायात नियमों के पालन का महत्व समझाया। उन्होंने कहा कि सड़क पर सभी की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए यातायात नियमों का पालन करना आवश्यक है। कार्यक्रम के दौरान ग्राम मोहगांव में एक हेलमेट बाइक रैली का आयोजन किया गया, जिसमें यातायात पुलिस और स्थानीय नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस रैली का उद्देश्य सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता फैलाना था। रैली के दौरान नागरिकों को हेलमेट पहनने के महत्व और सड़क पर सुरक्षित रहने के उपायों के बारे में जानकारी दी गई। यह कार्यक्रम कबीरधाम जिले में सड़क और साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है, जो नागरिकों को उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक बनाता है।

कलेक्टर रोहित व्यास ने उत्कृष्ट कार्य करने वाले 14 शिक्षकों और एक सीएसी को किया सम्मानित

विनोबा ऐप्प के माध्यम से स्कूलों में नवाचारी शिक्षा को दिया जा रहा प्रोत्साहन

जशपुर(विश्व परिवार)। जिले में उत्कृष्ट शिक्षण कार्य के लिए 14 शिक्षकों और 01 संकुल समन्वयकों को कलेक्टर रोहित व्यास ने गुरुवार को जिला कार्यालय सभाकक्ष में प्रमाण पत्र एवं उपहार देकर सम्मानित किया। और सभी शिक्षको को अपनी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी जिले के शिक्षकों द्वारा अक्टूबर और नवंबर माह में किये गए शिक्षकीय कार्यों एवं नवाचारी गतिविधियों को विनोबा ऐप्प में अपलोड किया था। गतिविधियों के विश्लेषण के पश्चात उत्कृष्ट शिक्षण कार्य के लिए शिक्षकों को चयनित किया गया। विनोबा भावे की टीम प्रोजेक्ट आफिसर सोमनाथ साहू ने बताया कि जिले में शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने के लिए एफएलएन, जवाहर नवोदय परीक्षा की तैयारी में सहयोग के साथ डाटा कलेक्शन का कार्य यशस्वी जशपुर के समन्वय में कर रही है। यह कार्यक्रम कलेक्टर के मार्गदर्शन में यशस्वी जशपुर के नोडल अधिकारी विनोद गुप्ता के द्वारा संचालित कराया जा रहा है। ज्ञात हो कि महाराष्ट्र एवं छत्तीसगढ़ में कार्य करने वाली गैर सरकारी संस्थान ओपन लिंक फाउंडेशन के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में विकास करने के लिए विनोबा ऐप्प का विकास किया गया है। इस अवसर पर माध्यमिक शाला पतराटोली के दिनेश कुमार चौधरी, प्राथमिक शाला हंगरोटोली की प्रिया गुप्ता , माध्यमिक शाला बटाईकेला के उमेश कुमार साहू, प्राथमिक शाला रोकबहार की खगेश्वरी चौधरी, प्राथमिक शाला तपकरा के शुभम जायसवाल, प्राथमिक शाला सुकबासुपारा के पुस्तम् प्रसाद यादव, प्राथमिक शाला डीपाटोली की आरती ओहदार, माध्यमिक शाला सकारदेगा की अनुराधा त्रिपाठी, हायर सेकेंडरी स्कूल बरजोर की चेतना पटेल, प्राथमिक शाला केवतीडांड की सरस्वती मालाकार, संकुल समन्वयक चोंगरीबहार के अनिल कुमार निकुंज , सेजेस बगीचा के कार्तिक कुमार को सम्मानित किए। विनोबा एप में पॉइंट के आधार पर साथ ही दुर्योधन सिंग, आरती ओहदार और सीमा गुप्ता को लाइब्रेरी बैग वितरण किया गया। शिक्षक ने बताया कि हम विनोबा ऐप्प में अपने स्कूल की गतिविधियों को अपलोड करते हैं साथ ही दूसरे शिक्षकों एवं विद्यालयों में किये जा रहे उत्कृष्ट प्रयासों एवं शिक्षकीय पाठन सामाग्रियों (टीएलएम) को देख कर उससे सिखते हैं।

टाइगर रिजर्व घोषित होते हुए भी क्षेत्र में हो रहा बाघों का आगमन

कोरिया(विश्व परिवार)। जिस दिनांक से छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान एवं तमोर पिंगला अभ्यारण को मिलाकर टाइगर रिजर्व घोषित किया गया है। आम जनों के साथ साथ टाइगर प्रजाति को भी जानकारी हो गई हैं की हमारे लिए नया आशियाना बन चुका है ठीक उसी दिन से बाघों का आगमन एवम आवागमन कोरिया जिले के विभिन्न क्षेत्रों में आम हो गया है जैसे कोरिया वनमण्डल के सोनहत वन परिक्षेत्र के बीट रामगढ़ के खटखप्पर नाला में बाघ का आगमन हुआ किन्ही कारणों से मृत पाया गया था एवम गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान के पार्क परिक्षेत्र कमर्जी एक तेंदुआ भी मृत पाया गया था एवम कोरिया वन मंडल के बैकुंठपुर परिक्षेत्र के टेमरी में लगातार बाघ की आवाजाही हो रही है एवम कोरिया वन मंडल के ही चिरमिरी परिक्षेत्र में बाघिन का आगमन हुआ जिसके लिए पूरा जिला प्रशासन कोरिया सरगुजा संभाग का पूरा वन अमला सभी बड़े अधिकारी 4 दिन के जद्दोजहद के बाद सफल रेस्क्यू कर पाए तथा उस बाघिन को वन्य संरक्षक वन्य प्राणी सरगुजा के आर बढ़ई एवम वन मंडलाधिकारी कोरिया श्री मति प्रभाकर खलखो के द्वारा अचानकमार टाइगर रिजर्व छोड़ा गया। जो की बाघों के लिए उपयुक्त आशियाना है पर अभी भी दिल्ली दूर है जिस तरह बांधवगढ़ ,अचानकमार, उदंती सीतानदी अभ्यारण,इंद्रावती ?? टाइगर रिजर्व आज पूरी तरह विकसित है।

डीएलसीसी व डीएलआरसी की तिमाही समीक्षा बैठक संपन्न

सूरजपुर(विश्व परिवार)। जिला पंचायत सीईओ श्रीमती कमलेश नंदिनी साहू की उपस्थिति में आज डीएलसीसी/जिला स्तरीय परामर्शदात्री समिति व डीएलआरसी/जिला स्तरीय पुनरीक्षण समिति की तिमाही समीक्षा बैठक जिला पंचायत सभाकक्ष में संपन्न हुई। बैठक में योजनाओं में बैंकों के प्रदर्शन की समीक्षा की गई। समस्त शासकीय योजनाओं की लक्ष्य प्राप्ति, पीएमजेजेबीवाई, पीएमएसबीवाई बीमा योजना की प्रगति, मुद्रा लोन, पेंशन योजना , पीएम स्वनिधि, किसान क्रेडिट कार्ड के प्रकरण के प्रस्तुति और स्वीकृति, अस्वीकृति एवं वर्तमान स्थिति, किसान क्रेडिट कार्ड, आधार सीडिंग, एनआरएलएम द्वारा आबंटित लक्ष्य एवं प्रगति, अंत्योदय स्वरोजगार योजना एवं आदिवासी स्वरोजगार योजना की प्रगति की जानकारी ली गई। उन्होंने उपस्थित सभी बैंकर्स को कृषि एवं इससे जुड़े क्षेत्रों के प्रकरणों का जल्द निराकरण करने को कहा। इसके साथ ही उन्होंने शासकीय योजनाओं से संबंधित सभी ऋण प्रकरणों को प्राथमिकता देते हुए स्वीकृत करने को कहा। इस अवसर पर एलडीएम श्री आनंद मिंज, विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधि व संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय शिवप्रसादनगर में जागरूकता कार्यक्रम का किया गया आयोजन

बाल विवाह एक बड़ा अपराध है, इससे बच्चे को बचाएँ और खुद बचें

सूरजपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री एस. जयवर्धन के निर्देश पर प्रत्येक स्कूलों कॉलेजों में जागरूकता शिविर का आयोजन सतत किया जा रहा है। जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री रमेश साहू के मार्गदर्शन एवं मनोज जायसवाल के नेतृत्व में अनवरत कार्यक्रम किये जा रहे हैं। एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय शिवप्रसादनगर में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिला बाल संरक्षण अधिकारी श्री मनोज जायसवाल ने बताया कि यहां सभी बच्चे घर द्वार छोड कर आये है। सभी मन लगाकर पढ़ाई करें। चुकी पूरे जिले के बच्चे यहां अध्ययनरत हैं। सभी बच्चों से संबंधित कानूनों की जानकारी रखें सभी नशे से दूर रहे नशा व्यक्ति का नाश कर देता है। किशोर न्याय अधिनियम की धारा 77 और 78 में इस हेतु प्रावधान दिये गये है। बच्चों से मादक पदार्थ बेचवाना खरीदवाना या नशे के व्यापार में बच्चों का उपयोग पर एक लाख रुपये तक जुर्माना और दो वर्ष के दण्ड का प्रावधान दिया गया है। बच्चे यदि नशा से दूर रहेंगे तो आने वाला भविष्य भी हमारा ठीक होगा। बाल विवाह पर चर्चा करते हुए श्री मनोज जायसवाल ने बताया कि हमें बाल विवाह हेतु पूरे समाज पर नजर रखनी है। आप सभी को जब भी पता चले कि आपके घर, पड़ोसी या गांव में बाल विवाह होता है तो इसकी सूचना आपको 1098,181,112 पर दे या अपने संस्था के माध्यम से हम तक सूचना पहुंचाएं। श्री जायसवाल ने सभी आवासीय बच्चों से आह्वान किया कि शिक्षा सभी समस्याओं की चाभी है आप सभी अच्छे मन से पढाई करें। सभी का मार्ग इसी पढाई से मिलने वाला है। कार्यक्रम में संगठक राष्ट्रीय सेवा योजना सूरजपुर में एन.एस.एस. से जुड़कर समाज सेवा करने के लिए प्रेरित किया । संस्था में संचालित एन.एस.एस. के विशेष सात दिवसीय शिविर के लिए कहा और विद्यालय का नाम रोशन करने को कहा गया पंडित रविशंकर त्रिपाठी शासकीय महाविद्यालय भैयाथान के एन.एस.एस. के विशेष सात दिवसीय शिविर में बौद्धिक परिचय में जिला बाल संरक्षण अधिकारी श्री मनोज जायसवाल ने कहा कि केवल प्रमाण पत्र के लिए एन.एस.एस. में जुडने से कोई फायदा नहीं है बल्कि समाज सेवा के भदयक से स्वयं के व्यक्तित्व विकास के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना एक सम्मत माध्यम है।

सूरजपुर विकासखंड में यूथ एवं इको क्लब के क्रियान्वयन हेतु प्रशिक्षण संपन्न

सूरजपुर ब्यूरो- (दैनिक विश्व परिवार)-सूरजपुर जिला कलेक्टर एस जयवर्धन के निर्देशन एवं राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा छत्तीसगढ़ रायपुर के तत्वावधान में विकास खंड स्तरीय दो दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय विश्रामपुर में किया गया।

युक्त प्रशिक्षण का शुभारंभ विद्यालय के प्राचार्य आशीष कुमार भट्टाचार्य, व्याख्याता अमर कुमार जैन की गरिमामयी उपस्थिति में सरस्वती वंदना व पूजा अर्चना से की गई। इस प्रशिक्षण में जिला स्तर के मास्टर ट्रेनर लौकेश कुमार साहू और नवल किशोर चौधरी के द्वारा सूरजपुर विकासखंड के विश्रामपुर जोन से 16 संकुलों के प्रत्येक माध्यमिक शालाओं यूथ एवम इको क्लब प्रभारी कल 41 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें जैविक खेती को अपनाते हुए बच्चों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने हेतु पोषण वाटिका के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। इसके अंतर्गत छात्रों के भविष्य के लिए एक कदम, जगह का चयन, मिट्टी की तैयारी, फसल का चयन, फसल चक्र, बीज संकलन, बीज प्रदर्शनी, नक्शा, बुवाई ,फसल वृद्धि के कारण, फसल सुरक्षा तथा कटाई जैसे उद्देश्यों को समझाया गया। इसके अलावा प्लास्टिक साक्षरता के अंतर्गत मानव स्वास्थ पर प्लास्टिक के दुष्परिणाम, प्लास्टिक का परिचय, प्लास्टिक और उसके प्रकार, प्लास्टिक का सफर, प्लास्टिक के विकल्प, जमीन मेला से संबंधित गतिविधियां कराई गई। इस अवसर जिला शिक्षा अधिकारी राम ललित पटेल, जिला मिशन सामान्य शशिकांत सिंह विकासखंड शिक्षा अधिकारी सुनील कुमार पोर्ते, विकासखंड स्त्रोत सामान्य में एक मनोज कुमार मंडल, बीआरपी सुदर्शन राजवाड़े का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने में संकुल समन्वयक एवं प्रशिक्षण प्रभारी गौरी शंकर पांडे का काम योगदान रहा।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर शनिवार 21 दिसंबर 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

कानून के आदर की आम हालत की ही एक झलक

साल 2013 में जाकर यूपीए-2 की सरकार ने कार्यस्थलों पर यौन उत्पीडऩ रोकने का अधिनियम (संक्षेप में पॉश कानून) बनाया। लेकिन उस पर अमल का हाल क्या है, यह खुद सुप्रीम कोर्ट के ताजा दिशा-निर्देशों से जाहिर होता है। कार्य स्थलों पर यौन उत्पीडऩ रोकने के लिए व्यापक दिशा-निर्देश सुप्रीम कोर्ट ने 27 साल पहले जारी किए थे। 1997 में सुप्रीम कोर्ट ने ये निर्देश जारी किए, जिन्हें %विशाखा गाइडलाइन्स' के रूप में जाना जाता है। उन दिशा-निर्देशों की भावना के मुताबिक कानून बनाने में 15 साल लग गए। इस बीच कई सरकारें आईं और गईं। 2013 में जाकर यूपीए-2 की सरकार ने यह अधिनियम (संक्षेप में पॉश कानून) बनाया, लेकिन उस पर अमल का हाल क्या है, यह खुद सुप्रीम कोर्ट के ताजा निर्देशों से जाहिर होता है। जस्टिस बीवी नागरत्ना और जस्टिस एन. कोटिश्वर सिंह की बेंच ने निर्देश दिया है कि पॉश कानून को पूरे देश में समान रूप से लागू किया जाए। अदालत ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को 31 दिसंबर 2024 तक हर जिले में एक अधिकारी नियुक्त करने को कहा है। यह अधिकारी 31 जनवरी 2025 तक स्थानीय शिकायत समिति का गठन करेगा और तालुका स्तर पर नोडल अधिकारी नियुक्त करेगा। कोर्ट ने जिला मजिस्ट्रेटों को निर्देश दिया है कि वे पॉश अधिनियम की धारा 26 के तहत सार्वजनिक और निजी संगठनों का सर्वेक्षण करें और मार्च 2025 तक रिपोर्ट पेश करें। जाहिर है, कानून बनने के 11 साल बाद भी ये सारे कदम नहीं उठाए गए हैं। ताजा निर्देश एक याचिका पर आया, जिसमें गुजारिश की गई है कि कोर्ट केंद्र और राज्य सरकारों से पूछे कि क्या सभी मंत्रालयों और विभागों में यौन उत्पीडऩ के आरोपों की जांच की समिति का गठन हो गया है। जस्टिस बीवी नागरत्ना की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा कि इस कानून को पूरे देश में लागू किया जाना है। कोर्ट तीन महीने के भीतर सर्वेक्षण करने और 31 मार्च 2025 तक रिपोर्ट जमा करने का निर्देश दे रहा है। पॉश अधिनियम की धारा 26 में प्रावधान है कि कोई विभाग, मंत्रालय या निजी संगठन अपने यहां जांच समिति का गठन नहीं करता है, तो उस पर 50,000 रु. तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। मगर ऐसी समितियां आज तक बनी ही नहीं हैं। यह देश में कानून के आदर की आम हालत की ही एक झलक है।

शीत ऋतु की ठिठुरन का एहसास करें

ललिता कश्यप

गलगल को छीलकर छोटे-छोटे टुकड़े कर लेते हैं और हरा धनिया, लहसुन या लहसुन की हरी पत्तियां, अदरक, गरम मसाला, हरी मिर्च, लाल मिर्च, पुदीने की खूब सारी चटनी बनाते हैं और गुड़ या चीनी भी डालकर कटे हुए गलगल में अच्छे से मिला लेते हैं ऋतु परिवर्तनशील है। भारत में छह ऋतु पाई जाती हैं- बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शीत, हेमंत और शिशिर ऋतु। भारत ही एक ऐसा देश है जहां छह ऋतुओं को अनुभव करने का आनंद प्राप्त होता है और यह आनंद केवल उत्तरी भारत में ही प्राप्त हो सकता है। अन्य अधिकतर देशों में केवल चार ऋतुएं ही पाई जाती हैं। बसंत, ग्रीष्म, वर्षा और शरद ऋतु। यहां हम केवल शरद ऋतु का ही वर्णन करेंगे। भारतीय वैदिक कैलेंडर के अनुसार भारत का नव वर्ष चैत्र मास से मनाया जाता है। ब्रह्मा जी ने इसी समय सृष्टि की रचना की थी। चैत्र मास में बसंत ऋतु आती है और वाक्देवी माता सरस्वती जी ने भी बसंत पंचमी के दिन अपनी वीणा की झंकार से सृष्टि को वाक शक्ति दी थी जिससे प्रत्येक वस्तु को शब्द ध्वनि प्राप्त हुई थी। चैत्र मास के बाद ही अन्य ग्यारह महीने अलग-अलग ऋतुओं के संग अठखेलियां करके बीतते हैं। इन्हीं महीनों के अनुसार कौनसी ऋतु किस-किस महीने आती है- 1.बसंत ऋतु- चैत्र से वैशाख महीना। फरवरी से मार्च। 2.ग्रीष्म ऋतु-ज्येष्ठ से आषाढ़। मार्च से जून। 3.वर्षा ऋतु- सावन से भाद्रपद। जुलाई से सितंबर। 4.शरद ऋतु- आश्विन से कार्तिक। अक्टूबर से नवंबर। 5.हेमंत ऋतु- मार्गशीर्ष से पौष। दिसंबर से जनवरी। 6.शिशिर ऋतु- माघ से फाल्गुन। जनवरी से फरवरी। भारत के उत्तरी भाग में अक्टूबर से शरद ऋतु अपना खूब असर दिखाने लगती है। लोग गर्म कपड़े पहनना आरंभ कर देते हैं। परंतु समतल इलाके जैसे पंजाब-हरियाणा में इन्हीं दिनों कम सर्दी होती है और अक्टूबर के अंत में धीरे-धीरे बढ़ती है। इसके विपरीत पर्वतीय क्षेत्रों में ठंड अधिक रहती है और पर्वत की चोटियों में बर्फगिरने के कारण चलने वाली शीत लहरें समतल क्षेत्र में अपने गुणों का अधिक प्रभाव दिखाती हैं। इसके कारण बहुत से जीव-जंतु सर्दी से बचने के लिए शीत निद्रा में चले जाते हैं, जैसे- सांप, मेंढक, चींटियां, छिपकलियां, गिलहरियां, खरगोश, जंगली चूहे, गोह, किरले, भालू, और भी ठंडे इलाके में रहने वाले जीव-जंतु। हेमंत ऋतु- यह दिसंबर से जनवरी तक रहती है। इस समय सर्दी अपनी चरम सीमा पर होती है। सर्दी से बचने के लिए लोग अनेक उपाय करते हैं। शरीर गर्म कपड़ों से अधिक भरा रहता है। सिर से पांव तक गर्म कपड़ों से लदे रहते हैं। सडक़ों पर जगह-जगह पर लोग आग जलाकर ताप रहे होते हैं। घरों में भी लोग हीटर, ब्लोअर तथा गर्म पानी की बोतलों का प्रयोग करते हैं। बर्फीले इलाकों में जहां लंबे समय तक बर्फ रहती है, वहां के लोग सर्दी आने से पहले ही लकड़ी व अनाज का भंडारण कर लेते हैं तथा बकरे के मीट को बड़ी मात्रा में सुखा कर रख लेते हैं। वे एक बड़े कमरे में तंदूर जलाकर तापमान को बढ़ा लेते हैं और तंदूर पर खाना भी बना लेते हैं। यहां के मकान ईंट-सीमेंट के नहीं होते हैं क्योंकि ऐसे मकान अधिक ठंडे होने के साथ-साथ बर्फ में खराब भी हो जाते हैं। यहां के मकान केवल लकड़ी के बनाए जाते हैं जो बर्फीले मौसम में भी गर्म रहते हैं ।यहां के लोग बड़ी मात्रा में भेड़-बकरियां पालते हैं जिससे सर्दी के मौसम में ऊन व मांस प्राप्त किया जा सके। ठंडे इलाकों में खानपान का भी विशेष ध्यान रखा जाता है। इस मौसम में गर्म तासीर का ही खाना खाया जाता है। तिल, अखरोट और बादाम से तैयार सिड्डू, मांस, मांस से तैयार मो-मो, थुक्पा, जुम्मा। दालों में कुलथ, मोठ तथा अन्य दालें व साग-सब्जियां, सूखे मेवे, मूंगफली। पेय पदार्थ में नमकीन चाय जिसकी चाय पत्ती एक विशेष प्रकार की होती है। देसी शराब, लुगड़ी इत्यादि। समतल इलाकों में भी साग-सब्जियां, कुलथ, मौठ, अन्य दालें, कुचालू, घंड्याली, मीट, मछली, चावल, मक्की, गेहूं की रोटी, चाय, कॉफी, शराब, सूखे मेवे, मूंगफली, पंजीरी, जिसे कहीं-कहीं सुंड भी कहते हैं, ये सब खाद्य पदार्थ शरीर को गर्म रखने के लिए खाए जाते हैं। शिशिर ऋतु- यह ऋतु जनवरी से फरवरी महीने में आती है। इसमें भी सर्दी चरम सीमा पर होती है, परंतु समतल इलाकों में 14 जनवरी यानी मकर संक्रांति से सूर्य के उत्तरायण हो जाने के कारण मौसम में धीरे-धीरे बदलाव आना आरंभ हो जाता है, जिसमें धीरे-धीरे दिन भी बढऩे लगते हैं और धीरे-धीरे ठिठुरती सर्दी से गुलाबी सर्दी आने लगती है, परंतु पर्वतीय इलाकों में अभी भी सर्दी चरम सीमा पर होती है। पूरी सर्दियों में धुंध और कोहरे की घनी चादर से सूर्य की किरणें धरती पर 12.00 से 1.00बजे तक नहीं पहुंच पाती हैं और दिन छोटे होने के कारण सूर्य जल्दी ही अस्त भी हो जाता है, जिसके कारण धरती का तापमान न्यूनतम चला जाता है। मकर संक्रांति से सूर्य के उत्तरायण होने से मौसम में बदलाव आने से धुंध और कोहरे का हटना आरंभ हो जाता है और सूर्य की रोशनी सुहावनी लगती है और उष्मित तापमान का आनंद आने लगता है। इन ऋतुओं में अधिक सर्दी होने के कारण कई तरह की बीमारियां भी लग जाती हैं। जैसे- खांसी, जुकाम, गले में खराश, बुखार, जोड़ों में दर्द। इन सबसे बचने के लिए प्रतिदिन सभी घरों में तुलसी, अदरक, काली मिर्च, लौंग-इलायची, दालचीनी डालकर औषधीय चाय बनाई जाती है जो स्वाद के साथ-साथ सर्दी से भी राहत देती है और बीमारियों से भी दूर रखती है। खांसी और गले में खराश के लिए अधिकतर लोग कक्कड़सिंगी और गाय के उपलों की राख को सही मात्रा में लेकर शहद मिलाकर चाटते हैं जो बहुत ही लाभदायक है। अधिक नाक बह रही हो तो धूप में बैठकर लोग गलगल खट्टे का मुरब्बा बनाकर खाते हैं, जिससे बहती नाक और जुकाम में तुरंत लाभ मिलता है। इसके बनाने का तरीका भी बहुत सरल है। सर्दी से बचने के लिए लोग अनेक उपाय करते हैं। शरीर गर्म कपड़ों से अधिक भरा रहता है। सिर से पांव तक गर्म कपड़ों से लदे रहते हैं। सडक़ों पर जगह-जगह पर लोग आग जलाकर ताप रहे होते हैं। घरों में भी लोग हीटर, ब्लोअर तथा गर्म पानी की बोतलों का प्रयोग करते हैं। बर्फीले इलाकों में जहां लंबे समय तक बर्फ रहती है, वहां के लोग सर्दी आने से पहले ही लकड़ी व अनाज का भंडारण कर लेते हैं तथा बकरे के मीट को बड़ी मात्रा में सुखा कर रख लेते हैं। वे एक बड़े कमरे में तंदूर जलाकर तापमान को बढ़ा लेते हैं और तंदूर पर खाना भी बना लेते हैं। यहां के मकान ईंट-सीमेंट के नहीं होते हैं क्योंकि ऐसे मकान अधिक ठंडे होने के साथ-साथ बर्फ में खराब भी हो जाते हैं। यहां के मकान केवल लकड़ी के बनाए जाते हैं जो बर्फीले मौसम में भी गर्म रहते हैं ।यहां के लोग बड़ी मात्रा में भेड़-बकरियां पालते हैं जिससे सर्दी के मौसम में ऊन व मांस प्राप्त किया जा सके इसके लिए पहले गलगल को छीलकर छोटे-छोटे टुकड़े कर लेते हैं और हरा धनिया, लहसुन या लहसुन की हरी पत्तियां, अदरक, गरम मसाला, हरी मिर्च, लाल मिर्च, पुदीने की खूब सारी चटनी बनाते हैं और गुड़ या चीनी भी डालकर कटे हुए गलगल में अच्छे से मिला लेते हैं और चटकारे लगा-लगा कर खाते हैं। इसमें एक तो विटामिन-सी प्रचुर मात्रा में होती है और यह तासीर में भी गर्म होता है। साथ ही इसके तीखे स्वाद से आंख-नाक बहने लगते हैं जिससे जुकाम में तुरंत फायदा मिलता है। बहरहाल ऋतु अनुसार ही साग-सब्जी को खाना चाहिए। विपरीत भोजन हानिकारक होते हैं।

आलेख

कोलकाता से राष्ट्रीय गठ बंधन का संचालन कैसे

हरिशंकर व्यास

अगर संसद के शीतकालीन सत्र में पहले तीन हफ्ते की कार्यवाही की रोशनी में विपक्षी राजनीति को देखें तो यह सवाल उठता है कि अगर राहुल गांधी या मल्लिकार्जुन खडग़े नेता नहीं होते हैं और ममता बनर्जी को कमान मिलती है तो विपक्षी राजनीति का स्वरूप कैसा होगा? क्या ममता बनर्जी विपक्षी गठबंधन को एक रखते हुए उसे भाजपा के खिलाफ ज्यादा प्रभावी तरीके से लडऩे के लिए तैयार कर पाएंगी? यह बड़ा सवाल है क्योंकि एक तो ममता बनर्जी ने कहा है कि वे पश्चिम बंगाल नहीं छोड़ेंगी और वहीं रह कर विपक्षी गठबंधन का संचालन करेंगी। कोलकाता से कैसे राष्ट्रीय गठबंधन का संचालन होगा, यह समझना मुश्किल है। ऐसा लग रहा है कि वे डेढ़ साल बाद होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले की पोजिशनिंग कर रही हैं। वे अपने को राष्ट्रीय नेता और कोलकाता को शक्ति पीठ दिखाना चाहती हैं ताकि बांग्ला मानुष में गर्व की भावना भर सकें और अगला चुनाव जीत सकें। यही राजनीति पिछले साल तेलंगाना में के चंद्रशेखर राव ने की था। उन्होंने तेलंगाना राष्ट्र समिति का नाम बदल कर भारत राष्ट्र समिति किया था और अपने को राष्ट्रीय नेता बताना शुरू किया था लेकिन वे चुनाव में पीट गए थे। अब ममता बनर्जी वही राजनीति कर रही है। उनका मकसद किसी तरह से 2026 का विधानसभा चुनाव जीतना है। उनको पता है कि अगला चुनाव बहुत मुश्किल होगा। लगातार 15 साल के राज की एंटी इन्कम्बैंसी को किसी बड़े गेमप्लान से ही काउंटर किया जा सकता है। दूसरी बात यह है कि ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस एक राज्य की पार्टी है। उन्होंने अनेक राज्यों में पैर फैलाने की कोशिश की लेकिन कामयाबी नहीं मिली। इसलिए बाकी प्रादेशिक पार्टियों के लिए भी उनका नेतृत्व स्वीकार करना मुश्किल होगा। कहने को सभी पार्टियां तैयार हो जाएंगी कि वे विपक्षी गठबंधन की नेता बनें लेकिन वे कोई सामूहिक फैसला सभी पार्टियों से लागू करवा पाएंगी इसमें संदेह है। तीसरी बात यह है कि ममता बनर्जी की प्रकृति अकेले चलने की है। वे हमेशा एकला चलो की राजनीति करती हैं और उनकी राजनीति बंगाल केंद्रित होती है। तभी वे चाहे जिस गठबंधन में रहें वहां उनका टकराव चलता रहता है। वे जब कांग्रेस में थीं तो कांग्रेस के सभी नेताओं से उनका झगड़ा चलता था। फिर जब अपनी पार्टी बनाई और भाजपा से तालमेल किया तो भाजपा से उनकी लड़ाई चलती रही और जब कांग्रेस के गठबंधन में आईं तो वहां भी लड़ाई चलती रहीं। उन्होंने कांग्रेस छोड़ कर अपनी पार्टी बनाई, फिर भाजपा को छोड़ कर कांग्रेस से गठबंधन किया और फिर कांग्रेस को छोड़ कर अकेले लड़ीं। अब फिर वे गठबंधन की नेता बनना चाहती हैं लेकीन उनकी एकला चलो वाली प्रकृति बाधा बनेगी। भारत के अब तक के राजनीतिक इतिहास को देखें तो किसी प्रादेशिक पार्टी के राष्ट्रीय गठबंधन का नेतृत्व करने की मिसाल नहीं मिलेगी। कांग्रेस के खिलाफ जनता पार्टी बनी तो सभी विपक्षी पार्टियों के विलय से बनी थी। हमेशा सबसे बड़ी पार्टी नेतृत्व करती रही है। एनडीए में भी भले टीडीपी या जनता दल यू के नेता संयोजक होते थे लेकिन नेतृत्व भाजपा के हाथ में ही होता था। संयोजक का पद प्रतीकात्मक होता था। फैसला अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी ही करते थे। सरकारों की बात करें तो उस मामले में भी सबसे बड़ी पार्टी के हाथ में सत्ता होने से ही स्थिरता रहती है। चाहे वीपी सिंह की सरकार हो या चंद्रशेखर की या एचडी देवगौड़ा की सरकार हो या आईके गुजराल की हर बार सबसे बड़ी पार्टी के नेता के हाथ में कमान नहीं थी। वाजपेयी की 1998 की सरकार के अपवाद को छोड़ दें तो उसके बाद 1999, 2004 और 2009 में सबसे बड़ी पार्टी ने कमान संभाली और सरकारों ने कार्यकाल पूरा किया। बहरहाल, ममता बनर्जी के समर्थन में यह तर्क दिया जा रहा है कि वे भाजपा से लड़ती हैं और सीधी लड़ाई में उसको हरा देती हैं। लेकिन एक प्रदेश में सीधी लड़ाई में भाजपा को हरा देना अगर कोई पैमाना है तो कई नेता दावेदार हो जाएंगे। झारखंड में हेमंत सोरेन ने भी लगातार दो मुकाबले में भाजपा को हराया है और गठबंधन का भी नेतृत्व किया है। दिल्ली में अरविंद केजरीवाल भी लगातार भाजपा को हरा रहे हैं।

अतीत से मिले को युवा पीढ़ी के नसीब से जोड़ें

कविता सिसोदिया

हर तरफसम्पन्नता है। जरूरत से भी अधिक सामान है, पर फिर भी आज आदमी दुखी है। उसकी लालसाओं का अंत नहीं। असंतोष और लालच बढ़ रहा है पृथ्वी पर मानव जीवन सर्वप्रथम कब आया, इस पर धार्मिक और वैज्ञानिक लोगों के अलग-अलग मत और विचार हैं, पर उस अदृश्य शक्ति ने पृथ्वी पर उत्पन्न हुए हर प्राणी की आवश्यकता की पूर्ति हेतु जल, वायु, सूर्य, वनस्पति और पृथ्वी के गर्भ में खनिजों के भंडार भर दिए। चौरासी लाख योनियों में मानव ही ऐसा प्राणी है जिसने अपने विवेक के बल पर हर क्षेत्र में अपना विकास किया और निरंतर कर रहा है। वह सर्दी, गर्मी, वर्षा से बचने के लिए गुफाओं से निकलकर साधारण सी कच्ची कोठरी से निकलकर आलीशान महलों तक पहुंच गया। इतना ही नहीं, उसने सजना-संवरना भी आरंभ किया और अपनी सृजनशीलता व क्षमता तथा विवेक द्वारा पृथ्वी के गर्भ में छिपे खनिज के भंडारों की भी खोज कर ली। प्राचीन समय में प्रजा और राजा में बहुत अंतर होता था। राजा या मंत्रीगण बड़े-बड़े महलों और भवनों में रहते थे तथा साधारण प्रजा राजा को अपना स्वामी मानती थी। उनकी बराबरी करना वह सपने में भी नहीं सोच सकती थी। राजा और मंत्री के परिवार रेशमी या कीमती वस्त्र पहनते और सोने-चांदी के मुकुट और गहनों से लदे रहते थे। सब प्रकृति से प्राप्त होता था फिर राजाओं का युग संपन्न हुआ। जनता का विकास होने लगा। शिक्षा व अन्य सुविधाओं के मिलने से राजा और प्रजा का अंतर घटने लगा। अभी चालीस-पचास वर्ष पहले तक मध्यम वर्गीय परिवारों में दो-चार सूट होते थे। दो जोड़ी जूते घर के लिए और एक जोड़ी जूते आने-जाने के लिए होते थे। गांव में तो परिस्थितियां और भी विकट थीं। वहां तो लोग साबुन का प्रयोग भी नहीं करते थे। राख या गोमूत्र से कपड़े धोए जाते थे। घर पर फटे-पुराने कपड़ों में टाकियां लगाकर पहना जाता था क्योंकि दुकानें बहुत दूर होती थी। घास की छत और कच्ची मिट्टी की दीवारों के कच्चे मकान होते थे। उस जमाने में आय बहुत कम हुआ करती थी। फिर भी पच्चीस-तीस रुपए मासिक आय वाला व्यक्ति अपने परिवार का सुख सुविधा-पूर्वक निर्वाह करता था। जीवन साधारण और सादगी से भरा होता था। छोटे-छोटे सपने थे। विकास का समय करवट बदलता रहा। धीरे-धीरे विकास की गाड़ी साधारण शहरी जनता से होती हुई गांव तक पहुंच गई। आज संसार की कायाकल्प हो चुकी है। जहां किसी समय आम आदमी के लिए अपनी गाड़ी खरीदना एक सपना होता था। बड़े-बड़े उद्योगपति या टाटा-बिरला जैसे अमीर लोगों के पास ही ये बहूमूल्य वस्तुएं होती थी। आम आदमी फिल्मों में ही कार, हवाई जहाज आदि देख सकते थे। पर आज गांव के भी हर घर के आंगन में कार, स्कूटर, बाइक खड़े हैं। कल-कारखानों में सामान ढोने को बड़े-बड़े ट्राले-ट्रकों की लाइनें लगी हैं। सडक़ों पर सैकड़ों की संख्या में गाडियों की बाढ़ से जाम लगा रहता है। संपन्न परिवारों में हर सदस्य के पास अपनी अलग-अलग गाडियां होना आम बात हो गई है। सडक़ों का विस्तार होने से यातायात के साधनों का भी द्रुत गति से विस्तार हुआ। गांव में भी वृक्षों को काटकर सब तरफबड़े-बड़े मकान बनाए जा रहे हैं जिनमें रहने वाले बहुत कम हो गए हैं। घर की अलमारी में एक सदस्य के पास इतने वस्त्र हैं जितने कभी बीस-पच्चीस सदस्यों के पूरे परिवार के पास होते थे। सौंदर्य प्रसाधन की भी बात मत पूछो। दस रुपए से लेकर लाखों रुपए तक मूल्य की एक ही वस्तु मिल जाएगी। बड़े-बड़े बाजार, मॉल, शॉपिंग कांप्लेक्स से लेकर रेहड़ी-फड़ी और साधारण दुकानों की गिनती नहीं की जा सकती। हर तरफसम्पन्नता है। जरूरत से भी अधिक सामान है, पर फिर भी आज आदमी दुखी है। उसकी लालसाओं का अंत नहीं। हजारों वाला लाखों का मालिक बनना चाहता है, लाखों वाला करोड़पति बनना चाहता है, करोड़पति राजा बनना चाहता है और राजा चक्रवर्ती राजा बनना चाहता है। संसार के भोगों का अंत नहीं है। मनुष्य का अंत हो जाता है, पर लालसाओं का अंत नहीं होता। सृष्टि के रचयिता ने मनुष्य को ही विवेक से नवाजा, पर साथ में असंतोष और लालच जैसे भयानक दुर्गुण भी पैदा कर दिए। इस विषय में महात्मा गांधी जी के अनमोल विचार थे 'कि पृथ्वी हर किसी की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, पर हर किसी के लालच को पूरा करने के लिए नहीं।' पर क्या कभी किसी ने सोचा है कि जिन वस्तुओं का हम अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, वे हमें कहां से प्राप्त हो रही हैं? यह सब हमें पृथ्वी के अंदर छिपे भंडारों का अति दोहन करके प्राप्त कर रहे हैं जिन्हें खनिज कहते हैं, जो हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। छोटी सी सूई से लेकर विशाल जहाज तक खनिजों से ही बनाए जाते हैं। ऊंचे-ऊंचे भवनों, कल-कारखानों, यातायात के साधनों को बनाने में इनका प्रयोग होता है। इनको चलाने के लिए ईंधन भी हमें खनिज से प्राप्त होते हैं। यहां तक कि हमारे भोजन में भी खनिजों का ही अंश है। मशीनरी-औजार, सभी खनिजों से ही बनते हैं। हमारे भोजन, कपड़े, जूते, साबुन, टूथपेस्ट, तेल, बर्तन आदि दैनिक उपयोग की सभी वस्तुओं के बनने में खनिजों का प्रयोग किया जाता है। परंतु आज के इस आत्मकेंद्रित और भौतिकतावादी युग में प्रत्येक व्यक्ति अपने निजी स्वार्थ के धागों में इतना उलझा है कि ये धागे मकड़ी के जाल की तरह बढ़ते ही जा रहे हैं तथा इनसे निकलने का रास्ता और भी जटिल होता जा रहा है। हमने अपने सरल-सहज जीवन को अपनी महत्वाकांक्षाओं की भयंकर राहों से लालच के भयंकर वनों में कुछ इस तरह से भटका दिया है कि खीझ, क्रोध, असहनशीलता, हिंसात्मक प्रकृति जैसे कांटे तन को लहूलुहान कर रहे हैं। आज उसे जितना अधिक ऐशोआराम के साधन मिल रहे हैं, उतने ही असंतुष्ट से विचलित मन से अपनी कामनाओं की नौका पर सवार होकर वह सागर में किनारा ढूंढ रहा है, पर कामनाओं के बोझ से लडख़ड़ाती नौका को मृगतृष्णा की तरह किनारा नहीं मिल रहा। हर तरफ वस्तुओं का बाजार और कल-कारखानों की भरमार लालच के साथ बढ़ती जा रही है।

कनाडा में सिख समुदाय आतंकियों के दबाव से त्रस्त

भारत डोगरा

तेईस जून, 1985 को कनिष्क एअर इंडिया 182 विमान में उड़ते समय भयंकर विस्फोट हुआ जिससे हवाई जहाज अटलांटिक सागर में आयरलैंड के तटीय क्षेत्र के पास गिरा और उसमें सवार सभी 329 व्यक्ति मारे गए। इनमें से अधिकतर भारतीय मूल के कनाडाई नागरिक थे। जिन परिवारों के सदस्य मारे गए आज भी उन्हें न्याय नहीं मिला। इसके अतिरिक्त, यह भी समय-समय पर प्राप्त होने वाले तथ्यों से स्पष्ट होता रहा है कि यदि कनाडा की गुप्तचर और पुलिस एजेंसियों ने समुचित कार्रवाई की होती तो बड़ी संभावना यह होती कि इस हादसे को रोका जा सकता था। कनाडा के पब्लिक सेफ्टी मंत्रालय ने ओंटारियो के पूर्व मंत्री बाब रे को इस त्रासदी की जांच का काम सौंपा था। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि कनाडा गुप्तचर संस्थान (सीएसआईएस-कनाडियन सेक्युरिटी इंटेलीजेंस सर्विस) के अधिकारियों ने ऐसे दो खालिस्तानियों का पीछा किया जो उनके संदेह के दायरे में थे। दोनों एक टापूनुमा वीरान जंगली क्षेत्र में पहुंचे। यहां तक गुप्तचरों ने उनका पीछा किया। फिर जहां ये खालिस्तानी गए थे वहां से बड़े धमाके की आवाज आई। कोई बच्चा भी कहेगा कि इस धमाके की आवाज आने से पूछताछ की जरूरत और बढ़ गई थी पर इन गुप्तचरों ने ऐसा कुछ नहीं किया और आगे कोई कार्रवाई ही नहीं की। अब जब अन्य तथ्य सामने आ चुके हैं तो स्पष्ट है, जैसा कि जांच रिपोर्ट में भी कहा गया है, कि यह सुनसान इलाके में बम टेस्ट करने का प्रयास था क्योंकि दो वायुयानों में बम रखने की तैयारियां उस समय पूरे जोरों पर थीं। यदि समय पर इन खालिस्तानियों से भली-भांति पूछताछ कर ली जाती तो षडयंत्र को उसी समय रोक पाने की संभावना थी। एक अन्य बड़ा मुद्दा है कि गुप्तचर एजेंसी सीएसआईएस ने पहले टेपों पर खालिस्तानी षडयंत्रकारियों की बहुत सी बातचीत रिकार्ड भी की थी और फिर इससे पहले कि इस रिकार्डिंग का समुचित विश्लेषण हो पाता, इनको नष्ट कर दिया गया। जांच रिपोर्ट ने इस बारे में इस केस की सुनवाई कर रहे जस्टिस जैसिफसन की टिप्पणी की ओर ध्यान दिलाया है, जिन्होंने इसे ऐसी लापरवाही बताया था, जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। आखिर, इतनी बड़ी लापरवाही कैसे हो गई, इस पर चर्चा हुई तो सीएसआईएस का यह पक्ष सामने आया कि उसके एक एजेंट ने खालिस्तानी षडयंत्रकारियों में घुसपैठ कर ली थी, हालांकि कनिष्क हादसे से तीन दिन पहले उसे अलग कर लिया गया। सीएसआईएस का पक्ष, जो प्रकाशित

रिपोटरे में बताया गया है (जैसा बीबीसी की एक रिपोर्ट में भी छपा) कि उसने अपने इस एजेंट के बचाव के लिए टेप नष्ट किए। पर ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह है कि एजेंट के पास जो जानकारी थी, उसका भरपूर उपयोग किया जाता तो इतना समय जरूर मिलता कि षडयंत्र का पता लगा कर उसे नाकाम कर दिया जाता। पर ऐसा नहीं हुआ। जांच रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि जो जानकारी सीएसआईएस के पास होती थी वह कनाडियन पुलिस (आरसीएमपी) के साथ ठीक से शेयर नहीं की जाती थी। कनाडा के उच्च स्तर के कुछ सुरक्षा अधिकारियों ने इस बारे में गंभीर चिंता व्यक्त करनी आरंभ की कि कनाडा में बहुत से आतंकी संगठनों ने डेरा जमा लिया है। सीएसआईएस के पूर्व अध्यक्ष वार्ड एलकाक ने अपनी उच्चस्तरीय जानकारी के आधार पर सीनेट की एक विशेष समिति को बताया कि अमेरिका को छोड़ दें तो किसी भी अन्य देश की अपेक्षा कनाडा में अधिक आतंकवादी संगठन सक्रिय हैं। उन्होंने बताया कि उनका संस्थान सीएसआईएस की आतंक-विरोधी शाखा ऐसे 50 आतंकवादी संगठनों और इनसे जुड़े 350 व्यक्तियों की जांच कर रहा है। उन्होंने आगे बताया कि ये विभिन्न आतंकवादी संगठन आतंकवादी कार्रवाइयों में सहायता देते हैं, आतंकवाद के लिए धन एकत्र करते हैं, प्रोपेगंडा और असत्य (डिसइंफाम्रेशन) फैलाने के लिए विभिन्न समुदायों का दोहन-शोषण करते हैं, अप्रवासियों को डराते-धमकाते हैं, आतंकियों के लिए कनाडा में सुरक्षित शरण स्थलों की व्यवस्था करते हैं, आतंकियों की अमेरिका तक आने-जाने की व्यवस्था करते हैं, और अप्रवासियों की तस्करी करते हैं। यह बयान कनाडा के फ्रेसर इंस्टीटयूट की अध्ययन रिपोर्ट में उपलब्ध है, जिसका शीषर्क है %कनाडा'ज इनएडिक्वेट रिस्पॉन्स टू टेररिज्म'। रिपोर्ट के लेखक हैं मार्टिन कोलाकोट। रिपोर्ट में बताया गया है कि विभिन्न खालिस्तानी आतंकवादी संगठनों के अतिरिक्त अनेक अन्य तरह के आतंकवादी संगठन भी कनाडा में सक्रिय हैं, और इनका संबंध अनेक अन्य चर्चित आतंकवादी हमलों से भी जुड़ा रहा है। रिपोर्ट ने स्पष्ट कहा है कि कई महत्त्वपूर्ण संदभरे में कनाडा की सरकार आतंकवाद के नियंत्रण के लिए असरदार कदम उठाने में असमर्थ रही है। रिपोर्ट ने बताया है कि खतरनाक आतंकी संगठनों पर सरकार प्रतिबंध नहीं लगा सकी और यहां तक कि ऐसे कुछ संगठन परोपकारी कार्य का आवरण लगा कर अपना प्रसार करते हैं, उस पर भी काफी समय तक रोक नहीं लग सकी। उनके विरुद्ध असरदार कार्रवाई करने के बहुत कम उदाहरण कनाडा में देखे गए हैं। इतना ही नहीं, कुछ राजनीतिक दल और नेता भी अपने संकीर्ण स्वार्थी हितों के लिए ऐसी ढील देने की नीति अपनाते हैं। सीएसआईएस की रणनीतिक योजना के पूर्व मुख्य अधिकारी डेविड हैरिस से जब पूछा गया।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/धर्म समाज/देश
रायपुर, शनिवार 21 दिसम्बर 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय से प्रख्यात अभिनेता एवं पद्मश्री मनोज जोशी ने की सौजन्य भेंट

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय से आज उनके निवास कार्यालय में प्रख्यात अभिनेता पद्मश्री मनोज जोशी ने सौजन्य भेंट की। मुख्यमंत्री श्री साय ने शॉल और स्मृति चिन्ह भेंट कर छत्तीसगढ़ की माटी में उनका स्वागत और अभिनंदन किया। इस दौरान मुख्यमंत्री और अभिनेता श्री जोशी के मध्य छत्तीसगढ़ में फिल्म निर्माण की संभावनाओं सहित निर्माताओं और फिल्म कलाकारों में छत्तीसगढ़ को लेकर बढ़ती रुचि के संबंध में चर्चा हुई। मुख्यमंत्री ने श्री जोशी के अभिनेता के रूप में निभाए चर्चित किरदारों की प्रशंसा भी की।

कृष्णा पब्लिक स्कूल के वार्षिक उत्सव में शामिल हुए सुशील सन्नी अग्रवाल

रायपुर (विश्व परिवार)। आज कृष्णा पब्लिक स्कूल का वार्षिक उत्सव कार्यक्रम पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम रायपुर में आयोजित किया गया था। जिसमें बच्चो द्वारा विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गयी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुशील सन्नी अग्रवाल उपस्थित हुए। श्री अग्रवाल ने स्कूल के बच्चों एवं समस्त शिक्षकों को वार्षिकोत्सव में आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद दिए तथा उत्साह वर्धन करते हुए कहा कि कृष्णा पब्लिक स्कूल के बच्चे सिर्फ प्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश और विदेशों में भी नाम कमाकर छत्तीसगढ़ का नाम रोशन कर रहे हैं। आज के कार्यक्रम में कृष्णा पब्लिक स्कूल के डायरेक्टर डॉ. राकेश मिश्रा, अर्चना मिश्रा, अपर्णा त्रिपाठी, शुभम मिश्रा, मदन मोहन त्रिपाठी, अखिलेश साहू, कमलेश नाथवानी, बाकर अब्बास, मुकेश मोंगराज, धनंजय, विष्णु नायक सहित समस्त शिक्षक गण, बच्चे एवं भारी संख्या में उनके परिजन मौजूद रहे।

मैक में आयोजित स्वरों की महफिल-स्वरांजलि

रायपुर (विश्व परिवार)। महाराजा अग्रसेन इंटरनेशनल कॉलेज (मैक), समता कॉलोनी में मैक म्यूजिक के द्वारा स्वरांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ चेयरमैन श्री राजेश अग्रवाल एवं अतिथि श्री अवतार सिंह जी के द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। मैक म्यूजिक कॉलेज प्रबंधन द्वारा विद्यार्थियों संगीत के क्षेत्र में विकास हेतु संचालित छात्र-छात्राओं का एक ग्रुप है। जिसमें गायन एवं विभिन्न वाद्ययंत्रों के वादन का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। मैक म्यूजिक द्वारा विद्यार्थी गायन एवं वादन के द्वारा अपने कला का प्रदर्शन सफलतापूर्वक करते है। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ प्राध्यापकों ने भी अपनी गायन की प्रस्तुति देकर सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में गजल, सूफी गाने, फिल्मी गाने गाकर जिसमें- अखियों के झरखो से... कभी-कभी मेरे दिल मे खयाल आता है... तेरी उम्मीद तेरा इंतजार... पल-पल दिल के पास जैसे गानों ने सभी श्रोतागणों को झूमने पर मजबूर कर दिया। चेयरमेन श्री राजेश अग्रवाल ने कार्यक्रम में मैक म्यूजिक के विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ाया तथा प्राध्यापकों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्राचार्य डॉ. एम. एस. मिश्रा, एडमिनिस्ट्रेटर सुश्री शिवांगी मिश्रा, का विशेष योगदान रहा। धन्यवाद ज्ञापन मैक म्यूजिक इंचार्ज श्रीमति अनुराधा दीवान द्वारा किया गया।

जिस मनुष्य के जीवन में श्रद्धा, समझ, संस्कार और संयम आ जाती है, वह कभी विचलित नहीं होता : मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज

इंदौर (विश्व परिवार)। जिस मनुष्य के जीवन में श्रद्धा- समझ- संस्कार और संयम ये चारों बातें आ जाती है, उसके ऊपर कितना भी बड़ा संकट आ जाऐ वह अपनी श्रद्धा से कभी विचलित नहीं होता बल्कि संकट के समय उसकी श्रद्धा और भी ज्यादा मजबूत हो जाती है। उपरोक्त उद्गार मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने तुलसीनगर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर के प्रागड़ में आयोजित धर्मसभा में व्यक्त किये।

मुनि श्री ने कहा कि जिसके जीवन में श्रद्धा, समझ, संस्कार और संयम यह चारों आत्मसात हो गये तो तय मानना वह कभी दुखी नहीं हो सकता उन्होंने कहा कि आप लोग रोज रोज मंदिर गये और भगवान के या गुरु के सामने अपना मस्तक झुकाया और आपकी श्रद्धा पक्की हो गयी यह जरुरी नहीं, श्रद्धा का मतलब है, भगवान के द्वारा प्रतिपादित तत्वों को जीवन का सर्वश्रेष्ठ आदर्श मानकर अपने जीवन को जीना मुनि श्री ने कहा कि आप लोग भगवान के प्रति श्रद्धा तो प्रकट कर देते हो लेकिन भगवान के वचनों के प्रति विश्वास बहुत कम लोगों में नजर आता है जिनको भगवान के प्रति विश्वास होता है उनको कोई विचलित नहीं कर सकता उन्होंने शास्त्रोक्त कथा के दो उदाहरण दिये पहला अंजन चोर का था जिसे णमोकार महामंत्र तो नहीं आता था लेकिन उसे सेठ पर पक्का विश्वास था कि जिस मंत्र की वह सिद्धी कर रहा है, वह निर्थक नहीं है यह मंत्र अमोघ मंत्र है और उसके अंदर सम्यक् श्रद्धा तो थी कुसंग वस उसके संस्कार बिगड़ गये थे और उसने सेठ के बचन को प्रमाण मान कर श्रद्धान किया और बोला आणम ताणं कछु न जानं सेठ बचन प्रमाणं और अपने प्राणों की परवाह न कर उन अस्त्रों के ऊपर से सींकचे की रस्सी काट दी और वह विद्या सिद्ध हो गयी सेठ के मन में संशय था उसने मंत्र को सिद्ध तो कर लिया लेकिन उसे डर लगता था कि यदि में उन रस्सियों को नहीं काट पाया तो मेरे जीवन का अंत हो जाऐगा लेकिन अंजन चोर को मंत्र पर अगाध श्रद्धा थी और अंजन चोर से निरंजन बन कर अपने जीवन का उद्धार कर गया, दूसरा उदाहरण सुदर्शन सेठ का है जो एक शीलवान चरित्रवान धर्मनिष्ट बहुत सुंदर श्रावक थे रानी उन पर आसक्त हो गयी और उन्होंने सुदर्शन सेठ से प्रणय निवेदन किया जिसे सेठ ने नकार दिया तो रानी बौखला उठी और उसने त्रियाचरित्र के माध्यम से सुदर्शन सेठ को फंसा दिया राजा ने रानी की बात को सच मानकर सुदर्शन सेठ को गिरफ्तार कर सरेआम फांसी की सजा सुना दी लेकिन सुदर्शन सेठ को अपने श्रद्धान पर पक्का विश्वास था उसने णमोकार महामंत्र का सहारा लिया और जब उसे फांसी दी जा रही थी और चमत्कार हो गया फांसी का वह फंदा फूलों की माला बन गयी। मुनि श्री ने कहा कि इन दौनों कथाओं में सबसे मूल तत्व है श्रद्धा और आत्मविश्वास जिसके बल पर स्थिरता आती है और हम बड़ी से बड़ी बाधाओं को पार कर जाते है।मुनि श्री ने कहा कि बस्तु स्वरुप को समझ लेता है वह छोटी छोटी बातों को नजरंदाज कर सही समझ विकसित कर संसार के संयोगों को अपने आश्रित न मानकर निमित्त नैमित्तिक सम्वंध मानता है।कर्म के संयोग से ही अनुकूल प्रतिकूल संयोग बनते बिगड़ते है उन्होंने कहा कि समझ जब विकसित हो जाती है तो उनका जीवन धन्य बन जाता है। इस अवसर पर मुनि श्री निर्वेग सागर महाराज ने कहा कि आस्था हमें प्रभु से जोड़ती है जो हमारी श्रद्धा को और मजबूत बनाती है, जैसे पतंग आकाश में उड़ती है और उसके उड़ाने बाला धरती पर अपने आपको सुखी महसूस करता है उसी प्रकार देव शास्त्र गुरु के प्रति हमारी आस्था जितनी प्रगाढ़ होगी उतना ही हमें आनंद महसूस होगा इस अवसर पर मुनि श्री संधान सागर महाराज एवं सभी क्षुल्लक मंचासीन रहे मुनिसंघ के प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी ने बताया मुनिसंघ तुलसीनगर में विराजमान है।सांयकालीन शंकासमाधान कार्यक्रम 5-45 से संचालित हो रहा है। संचालन बाल ब्र. नितिन भैया खुरई ने किया धर्म प्रभावना समिति के महामंत्री हर्ष जैन सहित समस्त पदाधिकारिओं तथा श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर तुलसीनगर तथा महालक्ष्मी नगर के पदाधिकारिओं सहित धर्म प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने सभी वंधुओ से पधारने की अपील की है। -**अविनाश जैन**

एनआईटी रायपुर में 10-दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला ब्लॉकचेन, फिनटेक और साइबर सिक्योरिटी

रायपुर (विश्व परिवार)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) रायपुर के कम्प्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विभाग द्वारा ब्लॉकचेन, फिनटेक और साइबर सिक्योरिटी : शेपिंग द फ्यूचर ऑफ़ सिक्योर डिजिटल फाइनेंस (बीएफसी-25) नामक 10-दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। यह कार्यशाला 6 से 16 जनवरी 2025 तक आयोजित होगी और इसका उद्देश्य डिजिटल वित्तीय प्रणाली को सुरक्षित और मजबूत बनाने के लिए ब्लॉकचेन, फिनटेक और साइबर सिक्योरिटी जैसे क्षेत्रों में उन्नत तकनीकी ज्ञान प्रदान करना है। इस कार्यशाला में ब्लॉकचेन तकनीक, स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट की सुरक्षा, साइबर इंफ्रास्ट्रक्चर और आईओटी नेटवर्क को सुरक्षित करने में ब्लॉकचेन के अनुप्रयोगों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इसके साथ ही ब्लॉकचेन-आधारित प्रमाणीकरण तंत्र और विकेंद्रीकृत डिजिटल दुनिया में हार्डवेयर सुरक्षा के महत्व पर भी चर्चा की जाएगी।

शेपिंग द फ्यूचर ऑफ़ सिक्योर डिजिटल फाइनेंस की घोषणा की

कार्यशाला का आयोजन एनआईटी रायपुर के निदेशक डॉ. एन. वी. रमना राव के मुख्य संरक्षण में किया जा रहा है। संरक्षक के रूप में एनआईटी के डीन (आर एंड सी) डॉ. गुरु प्रसाद मिश्रा और कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रदीप सिंह इस कार्यक्रम के अध्यक्ष होंगे। आयोजन के समन्वयकों में कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. प्रीति चंद्राकर और डॉ. के. जयराम नाइक के नाम शामिल है। इस कार्यशाला का उद्देश्य शोधकर्ताओं, उद्योग विशेषज्ञों और छात्रों को एक मंच पर लाना है।

तीर्थंकर वृषभनाथ से महावीर प्रभू की पावन परंपरा के पथानुगामी हैं आचार्य भगवन श्री विशुद्धसागर जी महाराज : मुनि श्री सर्वार्थ सागर जी

इचलकरंजी महाराष्ट्र (विश्व परिवार)। जयदु जिणिंदो महावीरों। चर्या शिरोमणी आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज के शिष्य श्रमण मुनी श्री अनुत्तर सागर जी महाराज, श्रमण मुनी श्री प्रणेय सागर जी, श्रमण मुनी श्री प्रणव सागर जी, श्रमण मुनी श्री सर्वार्थ सागर जी, श्रमण मुनी श्री संकल्प सागर जी और श्रमण मुनी श्री सदभाव सागर जी महाराज जी का उपसंघ पद्मप्रभू दिगंबर जैन मंदिर, इचलकरंजी (महाराष्ट्र) में विराजमान हैं।

विचित्र बाते प्रणेता श्रमण मुनी श्री सर्वार्थ सागर जी ने आचार्य विशुद्धसागर जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष में प्रवचन में कहा कि, अध्यात्म सरोवर के राजहंस, चर्या शिरोमणी दिगंबर जैन आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज सत्य कि साधना, आगमनुसार आचरण, गुरू- परंपरानुसार चारित्र- चलन में लवलीन ओजस्वी, तपस्वी साधक हैं।

ग्रंथ और निर्ग्रंथ सृजेता, तीर्थंकर वृषभनाथ से महावीर प्रभू कि पावन परंपरा के पथानुगामी, श्री कुंदकुंदाचार्य देव कि प्रतिमूर्ती, श्रमण परंपरा कि अद्भुत ज्योति, जिनशासन कि शान, आगम ज्ञाता, चिन्मय तत्व ज्ञायक, संतत्व से सिद्धत्व के अविराम पदयात्री, वस्तुत्व महाकाव्य के महाकावी, टूटती आस्थाओं को जोडने वाले महायोगी जगत के प्राणी मात्र को अहिंसा, करुणा, अनुकंपा का बोध देने वाले लघु महावीर, पर प्रपंचो से विरक्त, वितरागी निर्ग्रंथ मुनि ऐसे विश्व विख्यात दिगंबराचार्य चर्या शिरोमणी, आध्यात्मयोगी पूज्य गुरुदेव का जन्म 18 दिसम्बर को भिंड कि पावन भूमी में हुआ था।

आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज को राजकीय अतिथि सन्मान- उत्तर प्रदेश शासन, मुख्यमंत्री श्री आदित्यनाथ योगी द्वारा सन 2023 में। राजस्थान शासन, मुख्यमंत्री श्री भजनलाल जी शर्मा द्वारा, सन 2024 में। मध्य प्रदेश शासन, मुख्यमंत्री श्री मोहन जी यादव द्वारा, फरवरी सन- 2024 में। परम पूज्य चर्या शिरोमणी आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज को कर्नाटक सरकार से कर्नाटक प्रवास तक राजकीय अतिथि घोषित किया गया।

सन 2024 में आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज जी का विश्व रिकॉड- गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड (कर्म विपाक कृति केशर से लिखने पर)। लंडन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड (1201 काव्यों के 1100 पृष्ठिय वस्तुत्वमहाकाव्य पर)। यु.एस.ए. बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड (सर्वाधिक पंचकल्याणक हेतु)। डी. लिट.- ब्रिटिश नेशनल युनिवर्सिटी ऑफ क्यून मेरी अमेरिका द्वारा डाक टिकीट (डाक विभाग द्वारा प्रकाशित) सन 2021, 2024.

ऐसे महान योगी महाध्यानी तपस्वी व्यक्तित्व का जन्म जैन कुल में हुआ। जो आगामी कुछ ही भवो में सिद्ध होनेवाले हैं।

चतुर्थ काल के मुनीयों के सामान चर्या करने वाले ऐसे महान संत भारत कि भूमी पर चिरकाल तक ऐसे ही विहार करते हुए जैन धर्म कि पताका को संपूर्ण विश्व में उच्च अति उच्छता के साथ फहराये। हम मंगल भावना भाते हैं कि ये शीघ्र अतिशीघ्र आने वाले भवो में तीर्थंकर बनके तीन लोक के शिखर पर विराजमान हों।

आचार्य विशुद्ध सागर महाराज जी के चरणो कोटि कोटि नमन। नमोस्तु महाराज जी नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु। नमोस्तु शासन जयवंत हो। -**अभिषेक अशोक पाटील**

सिंगलयूज प्लास्टिक पर लगातार कार्यवाही जारी

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्र के जोन क्रमांक 01 अंतर्गत सिंगलयूज प्लास्टिक पर सामग्री बेचने एवं खरीदने को रोकने पर कार्यवाही लगातार जारी है। वार्ड क्रं. 02 स्मृति नगर में विभिन्न व्यवसासियों द्वारा सिंगल यूज प्लास्टिक पर सामग्री बेचने एवं व्यवसाय परिसर, फल ठेला में गंदगी पाए जाने एवं गीला एवं सूखा कचरा पृथक कर नहीं देने वाले व्यापारियो पर चालानी कार्यवाही की गई। प्रमुख रूप से जैकी गारमेंटस 1000, साथी फटका शांप 500, गुरू कलेक्शन शांप 500, एच कुओ सोल्यूशन 1000, एस.एस.रायल ब्यूटी पार्लर 4000, क्यू वर्मा साड़ी सेंटर 500, भारतीय जन औषधि केन्द्र 1000, दिलीप चतुर्वेदी 1000, मां बमलेश्वरी आटो सेंटर 500 एवं महेश सोनकर फल सेंटर से 50 रूपये की चालानी कार्यवाही करते हुए कुल 10050 रूपये की अर्थदण्ड वसूला गया।

आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय ने अधिकारियो को निर्देश दिए है, कि जो भी व्यापारी सिंगलयूज प्लास्टिक में खादय सामग्री विक्रय कर रहे है या व्यवसाय परिसर, फल ठेला के आस-पास गंदगी फैला रहे है या फिर गीला एवं सूखा कचरे को अलग-अलग डस्ट बिन में नही डाल रहे है। उनके पास जाकर उनसे चालानी कार्यवाही कर अर्थदण्ड वसूला जाए। साथ ही उन्हे समझाया जाए कि सिंगलयूज प्लास्टिक स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के लिए बहुत ही हानिकारक है। शहर की साफ-सफाई में जो व्यापारी सहयोग नही कर रहे है। उन पर अर्थदण्ड की कार्यवाही कर उन्हे समझाईस दी जाए। अगले बार से गंदगी न फैलाये नहीं तो निगम कचरा साफ नहीं करेगा। गुमास्ता लाइसेंस एवं ट्रेड लाइसेंस निरस्त भी कर दी जाएगी। इसकी संपूर्ण जिम्मेदारी व्यापारी की होगी।

कार्यवाही के दौरान जोन स्वास्थ्य अधिकारी, अंकित सक्सेना, स्वच्छता निरीक्षक कमलेश द्विवेदी, संतोष हरमुख, अंजनी सिंह, आदि उपस्थित रहे।

जनपद पंचायत बस्तर के पंचायतों में प्रधानमंत्री आवास योजना हितग्राहियों को प्रमाण पत्र वितरण

जगदलपुर (विश्व परिवार)। शासन के निर्देशानुसार जिला में सुशासन के एक वर्ष पूर्ण होने पर कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं जिसमें जनपद पंचायत बस्तर के ग्राम पंचायत कोलचूर, केशरपाल एवं कुम्हली में सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में प्रधानमंत्री आवास योजना हितग्राहियों को मुख्यमंत्री श्री साय द्वारा जारी किया गया प्रमाण पत्र, विष्णु की पाती प्रदाय किया गया एवं नये आवास में गृह प्रवेश कराया गया।

जशपुर कविता उत्सव ने साहित्य-संस्कृति के संगम का अद्भुत अनुभव कराया

कवियों ने अपनी भावपूर्ण और प्रेरणादायक रचनाओं से बांधा समा

चंदन हे मोर देश के माटी... ने छत्तीसगढ़ की संस्कृति से जोड़ा

जशपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़िया क्लाउड अ सोशियों कल्चरल आर्गेनाईजेशन एवं महिला काव्य मंच जशपुर के संयुक्त तत्वाधान में गुरुवार को जशपुर जिले के शासकीय राम भजन राय एनईएस महाविद्यालय के सेमिनार हॉल में जशपुर कविता उत्सव का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम शाम 6 बजे शुरू हुआ और साहित्य प्रेमियों को काव्य के रंग में सराबोर कर गया। शाम ढलने के बाद कड़ाके की ठंड में कविता के शब्दों की गर्माहट ने दर्शकों के पसीने बहा दिए।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एस. पी शशि मोहन सिंह, और डॉ.जुल्फिकार सिद्धिकी थे। कार्यक्रम का शुभारंभ राजेंद्र प्रेमी सरस के काव्य पाठ चंदन हे मोर देश के माटी से हुआ, जिसने दर्शकों को छत्तीसगढ़ की संस्कृति से जोड़ा। इसके बाद छोटी कवि के रूप में वस्फी सिद्दीकी ने अपने हास्य से श्रोताओं को गुदगुदाया। कार्यक्रम में अन्य कवियों ने भी अपनी भावपूर्ण और प्रेरणादायक रचनाओं से समां बांध दिया। इस कार्यक्रम के आयोजन में डॉ आनंद गुप्ता व अनिता गुप्ता का विशेष योगदान रहा जिसमें सजल ग्रुप ने भी सहयोग किया।

कविताओं की प्रस्तुति ने जीता दिल : इस आयोजन में कवि राजेंद्र प्रेमी सरस, मिलन मलरिहा, अनिता गुप्ता, ममता सिन्हा, गौरव अग्रवाल(मनेन्द्रगढ़) मधु बाजपेयी, सरस्वती चौहान, सरिता नायक, डॉ. एम. ज़ेड. यू. सिद्दीकी, वस्फी सिद्दीकी, विरेन्द्र श्रीवास्तव (मनेन्द्रगढ़) कुसुम माधुरी टोप्पो, यतीन्द्र गुप्ता (अंबिकापुर) अनामिका चक्रवर्ती (मनेन्द्रगढ़) और पुलिस अधीक्षक शशि मोहन सिंह ने अपनी कविताओं से उपस्थित साहित्य प्रेमियों का दिल जीता। डॉ.आनंद कुमार पांडे ने बताया जशपुर कविता उत्सव देश के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सतीश जायसवाल के मार्गदर्शन में हो रहा है। इस आयोजन के माध्यम से कवि, साहित्यकारों एवं स्थानीय लेखकों के बीच रचनात्मकता का आदान - प्रदान के साथ ही कविता, साहित्य के क्षेत्र में आने वाले नए लेखकों सानिध्य प्राप्त हुआ।

जशपुर जिला प्रशासन की अभिनव पहल : कलेक्टर रोहित व्यास के निर्देश पर पांच दिवसीय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का वर्कशॉप

जशपुर नगर (विश्व परिवार)। कलेक्टर रोहित व्यास के निर्देश पर कम्प्यूटर शिक्षकों के लिए पांच दिवसीय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस वर्कशॉप स्वामी आत्मानंद हिंदी माध्यम विद्यालय जशपुर में 19 दिसंबर से प्रारंभ हुआ। विज्ञान और तकनीक में करियर की संभावनाएं अपार है। आज के दौर में एआई का महत्व बहुत बढ़ गया है। कलेक्टर रोहित व्यास ने कक्षा में एआई आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जशपुर जिले के सभी सरकारी, प्राइवेट, अनुदान प्राप्त विद्यालयों और महाविद्यालयों में कार्यरत 50 कंप्यूटर शिक्षकों के लिए वर्कशॉप का आयोजन कराया है।

कार्यशाला का शुभारंभ जिला शिक्षा अधिकारी पी के भटनागर, मैत्री स्कूल आफ एंटरप्रेन्योरशिप प्राइवेट लिमिटेड के को-फाउंडर उत्कर्ष मिश्रा की उपस्थिति में मां सरस्वती की वंदना के साथ हुआ। जिला शिक्षा अधिकारी पी के भटनागर ने सभी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की यह कार्यशाला जिले की शिक्षा गुणवत्ता वृद्धि के लिए कलेक्टर सर की नवीन पहल है। मेरा विश्वास है कि आप सभी शिक्षक कक्षा में सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए इस ट्रेनिंग से मिले ज्ञान और टूल्स की समझ का बेहतर उपयोग विद्यार्थियों के बेहतर भविष्य के लिए करेंगे। प्रशिक्षक के रूप में दिल्ली से आए डिजिटल ट्रांसफार्मेशन कोच अनुराग दांगी ने पेडागॉजी, एआई की आवश्यकता, एआई टूल्स, चैटजीपीटी को ऑडियो विजुअल तरीके से प्रतिभागियों को समझाया। एआई टूल्स के उपयोग से विद्यार्थियों की टीचिंग स्किल बेहतर होगी। शिक्षक पाठ्यक्रम, टेस्ट पेपर, क्विज की डिजाइनिंग कम समय में बेहतर तरीके कर सकेंगे। उद्घाटन कार्यक्रम में प्राचार्य श्रीमती आर डुंगडुंग, बीईओ श्रीमती कल्पना टोप्पो, एडीपीओ विनय सिंन्हा और यशस्वी जशपुर के अवनीश पांडेय सहित सभी विकासखण्डों के प्रतिभागी उपस्थित रहे।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./16767/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16767
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652H00325** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MOHAMMAD SAIF ALI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MOHAMMAD KAMAR ALI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **RIHANA** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O SHAHBAZ HUSSAIN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./16808/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 20-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16808
वार्ड का नाम- 60 - चंद्रशेखर आजा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652F01322** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **TOSHAN DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **HALDHAR RAM DEWANGAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SUSHMA CHANDRAVANSHI** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O SHATRUGHAN KUMAR CHANDRAVANSHI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर शनिवार 21 दिसंबर 2024

संक्षिप्त समाचार

महाविद्यालय में हुआ रक्तदान शिविर का आयोजन

रामानुजगंज(विश्व परिवार)। रामनुजगंज शासकीय लरंगसाय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना,यूथ रेड क्रॉस सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया गया, महाविद्यालय में कुल 20 यूनिट रक्त दान किया गया। महाविद्यालय के बालिकाओं द्वारा कुल 3 यूनिट रक्तदान किया गया गया वहीं बालकों ने कुल.13. यूनिट रक्तदान किया, महाविद्यालय के प्रोफेसर व कर्मचारियों द्वारा 4 यूनिट रक्तदान किया गया। हर वर्ष इस महाविद्यालय में रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाता रहा है इस साल छात्र-छात्राओं में रक्तदान को लेकर अति उत्साह है रक्तदान करने वाले विद्यार्थियों स्टाफ के नाम इस प्रकार हैं -चंदा जगते,पूनम उपाध्याय, खुशबू सिंह, दीपक कुमार गिरी, वीरेंद्र कुमार सिंह,उदय कुमार यादव, रोहित कुमार, राजेश कुमार गुप्ता, सुधीर प्रजापति,रत्नेश यादव, नारद कुमार पुषाम, राहुल प्रजापति, पंकज रवि,निर्देश राय, शंभू सिंह,समीर खान,प्रो एस के धारी,प्रो रमेश कुमार खैरवार,प्रो श्याम बिहारी यादव , डॉ, राकेश ठाकुर उपस्थित रहे।

एक शराबी ने युवक की हत्या, गिरफ्तार

गरियाबंद(विश्व परिवार)। जिले में बीते दिन गुरुघासी दास जयंती की तैयारी को लेकर किये जा रहे बैठक के दौरान एक शराबी ने सतनामी समाज के युवक के सीने पर जान लेवा वार कर दिया, जिसके बाद वह बेहोश हो गया. उपचार के लिए अस्पताल ले जाने पर डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया है. इस ममाले को लेकर पुलिस ने बीएनएस एक्ट की धारा 103 (1) के तहत हत्या का प्रकरण दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमाण्ड पर जेल भेज दिया है. पूरी घटना पाण्डुका थाना क्षेत्र का है.जानकारी के मुताबिक, 18 दिसंबर को ग्राम धरसा में सतनामी समाज के लोग गुरु घासीदास जयंती के आयोजन के लिए बैठक कर रहे थे, इसी दौरान आरोपी पुषण कुमार गायकवाड ने शराब के नशे में विवाद शुरू कर दिया. विवाद के दौरान आरोपी आरोपी पुषण कुमार ने मृतक पंचराम बंजारे के सीने में जोरदार मुक्का मारा, जिससे पंचराम की मौके पर ही मौत हो गई.आरोपी के खिलाफ धारा 103 (1) बीएनएस एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध कर लिया गया। आरोपी की पहचान: पुषण कुमार गायकवाड, पिता सुमेरी गायकवाड, उम्र 28 वर्ष, निवासी ग्राम धुरसा, थाना पाण्डुका, जिला गरियाबंद है।

नर हाथी जंगल में मृत अवस्था में मिला

बलरामपुर(विश्व परिवार)। बलरामपुर जिले के रामानुजगंज वन परिक्षेत्र के छतवा गांव में एक नर हाथी का शव मिलने से हड़कंप मच गया है। सूचना मिलने के बाद रेंजर, डीएफओ समेत वन विभाग के अन्य अधिकारी मौके पर पहुंचे और जांच में जुट गए है। फ्लिहाल हाथी की मौत किस वजह से हुई इसका पता नहीं चल पाया है। वन विभाग की टीम ने जांच शुरू कर दी है, इधर शव का पीएम भी करवाया जा रहा है। हाथी की मौत प्राकृतिक है, बीमारी या किसी दुर्घटना से हुई है। इस विषय में वन विभाग गहन जांच कर रही है। वन विभाग का कहना है कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों का स्पष्ट रूप से पता चल पाएगा। फ्लिहाल क्षेत्र में सतर्कता बढ़ा दी गई है। इस घटना को लेकर स्थानीय लोगों से भी पूछताछ की जा रही है।

नारायणपुर के स्कूलों में मनाया गया सुशासन पखवाड़ा

नारायणपुर(विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ राज्य सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में राज्य में सुशासन पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर जिले के सभी प्राथमिक, माध्यमिक, हाई और हायर सेकेंडरी स्कूलों में विभिन्न रचनात्मक और ज्ञानवर्धक गतिविधियों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों के बीच क्विज प्रतियोगिता, सुशासन पर पेंटिंग और पोस्टर प्रतियोगिता, फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता, पोस्टकार्ड लेखन, मेंहदी प्रतियोगिता, और रंगोली प्रतियोगिता जैसे आयोजन किया गया। इन आयोजनों के माध्यम से छात्रों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया और शासन की जनहितकारी नीतियों को समझने का अवसर प्राप्त किया। इसके साथ ही, राज्य सरकार द्वारा जनसामान्य को विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से व्यापक प्रचार-प्रसार भी किया गया। इस अभियान का उद्देश्य नागरिकों तक शासन की उपलब्धियों और जनहितकारी योजनाओं की जानकारी पहुंचाना और उन्हें सरकारी सेवाओं का अधिकतम लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करना है। सुशासन पखवाड़ा के तहत आयोजित ये कार्यक्रम न केवल छात्र-छात्राओं में रचनात्मकता और जागरूकता बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं, बल्कि जनता को भी योजनाओं के प्रति संवेदनशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना : मेंढका डोबरा मंदिर परिसर में परिणय सूत्र में बंधे 220 जोड़े

जनप्रतिनिधियों सहित अधिकारियों ने नव-वर वधुओं को दिया आर्शीवाद

निर्धन परिवारों की मदद के लिए प्रतिबद्ध है सरकार

नव दंपतियों के बैंक खातों में होगा 35 हजार राशि का अन्तरण

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। आज मुख्यालय के मेंढका डोबरा मंदिर परिसर में मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजनान्तर्गत सामूहिक विवाह कार्यक्रम में जिलेभर के 220 वर वधु परिणय सूत्र में बंध गए। इस अवसर पर उपस्थित जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों ने नव दंपतियों को भावी जीवन के लिए शुभकामनाएं दी। इस दौरान जनप्रतिनिधियों ने अपने शुभकामना संबोधन में कहा कि प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार गांव, गरीब और किसानों के हित में अनेक योजनाएं संचालित कर रही है। इन कल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित होकर निर्धन परिवारों को विकास की ओर अग्रसर होने का अवसर मिल रहा है। दंतेवाड़ा जिले के दूरस्थ क्षेत्र में यह सामूहिक कन्या विवाह में आज 220 जोड़े दाम्पत्य सूत्र में बंधकर गृहस्थ जीवन में कदम रख रहे हैं। यह सब राज्य सरकार की मुख्यमंत्री कन्यादान योजना से फलीभूत हुआ है, जो सरकार की गरीब परिवारों की सेवा करने की कटिबद्धता को दर्शाता है। इसके अलावा महिला बाल विकास विभाग के मैदानी कर्मचारी भी बधाई के पात्र है जिन्होंने विभिन्न ग्रामों पारा, टोले, मोहल्लों से विवाह योग्य युवक युवतियों का पंजीयन कर सामूहिक विवाह से लाभान्वित किया। कार्यक्रम में वैदिक मंत्रोच्चार एवं सप्तपदी के पावन वचनों को अंगीकार करने वाले जोड़ों में से दो जोड़े नियद नेल्लानार ग्राम धुरली के निवासी थे। इनमें सुश्री सीमा भास्कर एवं सुदरी तेलाम भी शामिल थी। सीमा 10वीं पास है और नगर पालिका परिषद बड़े बचेली (झाड़ू लगाने का काम) सफाई कर्मचारी के रूप में कार्यरत है सीमा का विवाह रेमष भास्कर के साथ हुआ जो कृषक है इसी प्रकार सुंदरी तेलाम कामगार श्रमिक है। और सुंदरी और धन्नु कुंजाम कामगार श्रमिक है। दोनों नव विवाहितों में शासन की इस योजना की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए इसे निर्धन वर्गों के लिए उपयोगी बताया जो विवाह के भारी खर्चे से निम्न वर्गीय परिवारों को चिंता मुक्त करती है। उल्लेखनीय है कि आज मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना में तीन जोड़े ईसाई धर्म से संबंधित थे। जिनका उनके धर्म अनुरूप परम्परा से विवाह संपन्न हुआ। विवाह योजनान्तर्गत सभी नव वर वधुओं के बैंक खाते में 35 हजार रुपये की राशि का अंतरण भी किया गया।

बंधा तालाब के पुनर्विकास के लिए 1.79 करोड़ के कार्यों का विधायक उसेण्डी ने किया भूमिपूजन

कोंडागांव(विश्व परिवार)। बस्तर विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष एवं विधायक लता उसेण्डी ने बुधवार को जिला मुख्यालय कोण्डागांव स्थित बंधा तालाब के मरम्मत एवं पुनर्विकास हेतु कुल 01 करोड़ 79 लाख रुपए लागत के कार्यों का भूमि पूजन किया। जिला निर्माण समिति कोण्डागांव के माध्यम से जिला मुख्यालय कोण्डागांव स्थित बंधा तालाब का मरम्मत एवं पुनर्विकास कार्य लागत 34.48 लाख रुपए, पुनर्विकास कार्य (सिविल कार्य) लागत 46.99 लाख रुपए, पुनर्विकास कार्य (विद्युतीकरण कार्य) लागत 47.96 लाख रुपए और मरम्मत एवं पुनर्विकास कार्य (विद्युतीकरण कार्य) लागत 49.87 लाख रुपए का कार्य शामिल है। विधायक लता उसेंडी ने कहा कि जिला बनने के बाद हमारी सरकार ने कोण्डागांव में विकास के नए आयाम स्थापित किया है। आने वाले समय में बेहतर व्यवस्था हो और विकास होगा। कोंडागांव शहर शिल्प कला के कारण विख्यात है और विश्व में एक अलग ही पहचान है। इसी तरह अन्य क्षेत्रों में भी पहचान बने, इस दिशा में प्रयासरत हैं और काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि नगर विकास के अभी और कार्य करना है। उन्होंने बताया कि बस्तर आर्ट और अन्य सांस्कृतिक केंद्रों को विकसित कर कोण्डागांव को पर्यटन हब बनाने की दिशा में काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कोण्डागांव के विकास की गति को बनाए रखने में आप सभी का सहयोग आवश्यक है। उन्होंने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय को धन्यवाद देते हुए कहा कि महतारी वंदन योजना के तहत जिले के महिला हितग्राहियों के खाते में एक महीने में 17 करोड़ रुपए की राशि अंतरित हो रही है, जिससे जिले की महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो रही हैं। कलेक्टर कुणाल दुदावत ने कहा कि कुल 1 करोड़ 79 लाख रुपए से बंधा तालाब को पूर्ण विकसित किया जाएगा। विशेष तौर पर बच्चों और बुजुर्गों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए विकसित किया जाएगा। नगर पालिका उपाध्यक्ष जसकेतु उसेंडी ने कहा कि बंधा तालाब को आधुनिक सुविधाओं से लैस किया जाएगा। इस पुनर्विकास से न केवल बंधा तालाब का स्वरूप बदलेगा, बल्कि यह नगर के सौंदर्य और सुविधाओं में भी अभूतपूर्व वृद्धि करेगा, जिससे स्थानीय लोगों और पर्यटकों को लाभ मिलेगा। इस अवसर पर दीपेश अरोरा, पार्षद सतीश सोनी, सोनमनी पोयाम, लक्ष्मी ध्रुव, अंकुश जैन, जिला पंचायत सदस्य बाल सिंह बघेल, जिला पंचायत सीईओ अविनाश भोई उपस्थित रहे।

वन चौपाल में मिल रही सुशासन के एक वर्ष की उपलब्धियों की जानकारी

जगदलपुर(विश्व परिवार)। सरकार गठन के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में विभिन्न गतिविधियों के आयोजन अंतर्गत बस्तर वनमंडल जगदलपुर में आने वाले 9 परिक्षेत्रों में कुल गठित 351 वन प्रबंधन समितियों में वन-जलवायु परिवर्तन विभाग द्वारा विभिन्न जनहितकारी योजनाओं-गतिविधियों की जानकारी दी गई। विभागीय अमलों द्वारा अपने-अपने कार्यक्षेत्र में कुल 7363 ग्रामीणों को वन चैपाल के माध्यम से योजनाओं की जानकारी दी गई जिसमें मुख्यताः तेन्दुपत्ता संग्राहकों को प्रति मानक बोरा राशि 4 हजार से बढ़कर 5 हजार रुपए, किसान वृक्ष योजना अंतर्गत इच्छुक कृषकों को 5 एकड की भूमि पर निरूशुल्क पौधा लगा कर देना। वन प्रबंधन समितियों के खाते में उपलब्ध राशि के माध्यम से व्यक्ति विकास सशक्तिकरण एवं रोजगार मूलक कार्य वन क्षेत्रों के हितग्राहियों को पात्रतानुसार वन अधिकार पत्रों की वितरण, वन प्रबंधन समितियों के अंतर्गत गठित स्व सहायता समूहों को व्यक्तिगत आय द्वारा सृजन-रोजगार के संसाधन उपलब्ध कराने हेतु चक्रिय निधि के माध्यम से 4 प्रतिशत ब्याज दर से ऋण प्रदाय करना। इसके अलावा एक पेड़ माँ के नाम कार्यक्रम अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति को एक पौधा लगाने हेतु जागरूकता अभियान और जनहानि (मृत्यु होने पर) 6 लाख रुपए स्थानी रूप से अपंग होने पर 2 लाख रुपए, जन घालय होने पर 59 हजार 100 रुपए, पशु हानि होने पर 30 हजार रुपए, फसल हानि होने पर 9 हजार रुपए (प्रति एकड़) एवं लघु वनोपज प्रसंस्करण एवं विपणन के माध्यम से कोदो, कुटकी, रागी, लाख, शहद तथा अन्य लघु वनोपज उत्पादो के न्यूनतम समर्थन मुल्य में वृद्धि की जानकारी दी गई।

गुरुघासीदास जयंती के अवसर पर सम्मान कार्यक्रम संपन्न

सुकमा(विश्व परिवार)। 18 दिसंबर को गुरु घासीदास जयंती के अवसर पर एवं सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने पर जनादेश पर्व के अंतर्गत समाज कल्याण विभाग के तत्वाधान में आकार आवासीय संस्था में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में दिव्यांगजनों एवं वृद्धजनों हेतु विभिन्न सांस्कृतिक एवं सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ शासन के एक वर्ष की उपलब्धियां से संबंधित हितग्राहीमूलक योजनाओं से संबंधित वीडियो भी प्रदर्शित किया गया। साथ ही आकार संस्था के दिव्यांग बच्चों द्वारा लोकगीत, लोकनृत्य, भाषण प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में उत्कृष्ट कार्य करने वाले दिव्यांग कर्मचारियों को एवं कला के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करने वाले दिव्यांग बच्चों को भी पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित वरिष्ठ जनों को कंबल, श्रीफल एवं वाकिंग स्टिक वितरित किया गया। उल्लेखनीय है कि प्रत्येक वर्ष 18 दिसंबर को गुरु घासीदास जयंती को मद्य निषेध दिवस के रूप में मनाया जाता है इसलिए लगभग 600 लोगों को नशा मुक्ति की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। जिन्हें शासन-प्रशासन के द्वारा चलाए जा रहे हितग्राहीमूलक योजनाओं के बारे मे जानकारी प्रदान की गई।

जर्जर सड़क के विरोध में भूख हड़ताल कर रहे युवा को प्रशासन ने कराया अस्पताल में भर्ती

रामानुजगंज(विश्व परिवार)। नगर के युवा राहुल जीत सिंह के द्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग 343 के जर्जर स्थिति को लेकर किये जा रहे अनशन के आज तीसरे दिन आज सुबह 8 बजे प्रशासनिक अधिकारी एवं पुलिस प्रशासन के लोग अनशन स्थल पर पहुंचकर अनशन तुड़वाने का प्रयास प्रारंभ कर दिए थे। इस बीच मेडिकल टीम के द्वारा राहुल जीत का हेल्थ चेकअप किया गया जिसके बाद पुलिस प्रशासन के द्वारा जोर जबरदस्ती करते हुए एंबुलेंस से 100 बिस्तर अस्पताल ले जाया गया एवं इधर टेंट को उखवा दिया गया। जिसके बाद ही अनशन समाप्त हो सका। राहुल सिंह ने कहा की बर्बरता पूर्वक प्रशासन के द्वारा अनशन को तुडवाया गया। गांधीवादी तरीके से अनशन कर रहा था यह मेरा लोकतांत्रिक अधिकार था जिसका दमन हुआ। गौरतलब है कि नगर के युवा राहुल जीत सिंह के द्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग 343 के जर्जर हो जाने से प्रतिदिन हो रही दुर्घटनाएं एवं मौत को लेकर चिंता व्यक्त करते हुए सड़क की मरम्मत के मांग को लेकर अनिश्चितकालीन अनशन करने की घोषणा करते हुए एसडीएम को ज्ञापन सौपा था। 17 दिसंबर के दोपहर 12 से भारत माता चौक के समीप राहुल जीत सिंह अनिश्चितकालीन अनशन पर बैठ गए थे अनशन पर बैठने के पूर्व से व्यापक जन समर्थन राहुल जीत को मिलना प्रारंभ हो गया था वही अनशन बैठने के बाद रामानुजगंज के वार्ड क्रमांक 1 से लेकर 15 तक के वार्डों के लोगों का लगातार समर्थन मिल ही रहा था। वहीं आसपास ग्रामीण क्षेत्र के लोग भी धरना स्थल में आकर समर्थन करना प्रारंभ कर दिए थे अनशन के दूसरे दिन ही धरना स्थल पर दिनभर समर्थन देने वालों की भीड़ लगी रही। धरना के पहले दिन ही अनशन तुड़वाने का प्रयास प्रशासन के द्वारा कराया गया था परंतु सफ्ल नहीं हो सका था। आज प्रशासन के द्वारा जबरदस्ती अनशन को तुड़वाया गया। 1 घंटे के गहमा गहमी के बीच ले जाया गया राहुल जीत को..... प्रशासन एवं पुलिस आज सुबह 8 बजे के करीब धरना स्थल में पहुंच गए थे जिनके द्वारा राहुल जीत की बात राष्ट्रीय राजमार्ग के कार्यपालन अभियंता से कराई गई।

स्वास्थ्य शिविर में 211 ग्रामीणों का स्वास्थ्य जांच सहित 93 ग्रामीणों का नेत्र परीक्षण

जगदलपुर(विश्व परिवार)। शासन के एक वर्ष पूर्ण होने पर सुशासन का एक साल खुशहाल हुआ छत्तीसगढ़ पर आधारित के अवसर पर कलेक्टर हरिस एस के मार्गदर्शन में जगदलपुर विकासखंड के मांझीगुड़ा में सुशासन का एक साल खुशहाल हुआ छत्तीसगढ़ पर आधारित विकासखण्ड स्तरीय कार्यक्रम सम्पन्न हुई। इस दौरान स्वास्थ्य परीक्षण शिविर तथा मितानिन सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस मौके पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला पंचायत सदस्य धरमूराम मण्डावी ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार ने एक साल में गांव, गरीब और किसानों के हितों के लिए अनेक कार्य किया है। राज्य सरकार की यह पहल सुशासन की दिशा में महत्वपूर्ण साबित हुई है। उन्होंने ग्रामीणों से शासन की जनहितकारी योजनाओं से लाभान्वित होकर विकास में सहभागिता निभाने का आग्रह किया। कार्यक्रम में जिला स्तरीय रामलल्ला दर्शन योजना समिति के सदस्य रामाश्रय सिंह और जनपद पंचायत सदस्य सुब्रतो विश्वास ने राज्य सरकार के एक वर्ष की उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार ने अपने वादे पूरे किया है। माताओं-बहनों को महतारी वंदन योजना से लाभान्वित कर सशक्त बना रही है। वहीं गरीब परिवारों को प्रधानमंत्री आवास योजना,रामलल्ला दर्शन योजनांतर्गत भगवान राम के दर्शन करने का लाभ, किसानों को कृषक उन्नति योजना से लाभान्वित कर रही है। राज्य सरकार शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, बिजली जैसी मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता के लिए निरन्तर सकारात्मक प्रयास कर विकास के नए आयाम स्थापित कर रही है। उन्होंने सरकार के विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देकर इन योजनाओं से लाभान्वित होने का आग्रह किया। वहीं विष्णु की पाती का वाचन कर ग्रामीणों को अवगत कराया गया। इस मौके पर निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर में 211 ग्रामीणों का स्वास्थ्य जांच कर उपचार किया गया तथा 93 ग्रामीणों का नेत्र परीक्षण किया गया। साथ ही 07 ग्रामीणों का आयुष्मान कार्ड बनाया गया। स्वास्थ्य शिविर में मुख्य रूप से बीपी, शुगर, सिकलसेल की जांच की गई। स्त्रीरोग, शिशुरोग, मातृत्व शिशु स्वास्थ्य, नेत्र परीक्षण, चर्मरोग, अस्थि रोग, चर्मरोग, मनोरोग, आयुष्मान वयवंदन कार्ड निर्माण तथा आयुष्मान भारत पंजीयन, गैर संचारी रोग अंतर्गत ओरल कैंसर, सर्वाइकल कैंसर, ब्रेस्ट कैंसर, तंबाकू एवं नशामुक्ति, वयोवृद्ध जांच उपचार कर आवश्यक सलाह दी गई। वहीं निक्षय निरामय छत्तीसगढ़ 100 दिवसीय पहचान एवं उपचार अभियान के तहत क्षय रोग के बारे में परामर्श दी गई। कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा सुपोषण पर आधारित स्थानीय साग-सब्जी तथा पौष्टिक आहार एवं व्यंजन का प्रदर्शन किया गया। आरंभ में माध्यमिक शाला मांझीगुड़ा की छात्राओं ने मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। वहीं एनआरएलएम की महिला समूह की दीदियों ने रंगोली के जरिए सुशासन का एक साल खुशहाल हुआ छत्तीसगढ़ को प्रदर्शित किया।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर शनिवार 21 दिसंबर 2024

व्यापार समाचार

बिहार बिज़नेस कनेक्ट 2024 की शानदार शुरुआत

पटना: बिहार सरकार की बहुप्रतीक्षित दो दिवसीय बिहार बिज़नेस कनेक्ट 2024- ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट की शुरुआतआज उद्योग विभाग, बिहार द्वारा पटना के ज्ञान भवन में किया गया।माननीय उप मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी ने मुख्य अतिथि के रूप मेंकार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उनके अतिरिक्त, माननीय उप मुख्यमंत्री श्रीविजय कुमार सिन्हा, माननीय उद्योग-सह-पर्यटन मंत्री श्री नीतीश मिश्रा एवंमाननीय श्रम मंत्री श्री संतोष कुमार सिंह ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दी। बिहार बिज़नेस कनेक्ट 2024 उद्योग विभाग, बिहार सरकार की एक ऐतिहासिक पहल है, जिसका मुख्य उद्देश्य राज्य के औद्योगिक विकास को प्रोत्साहित करना है। कार्यक्रम के पहले दिन आज कुल छह सत्र आयोजित किए। पहला सत्र बिहार में निवेश के अवसर थीम पर आधारित था। कार्यक्रम की शुरुआतपहले सत्र में बिहार गीत एवं उपस्थित गणमान्य अतिथियों द्वारा कपूर के पौधे में पानी अर्पित किया गया, जो बिहार सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। श्री अलोक रंजन घोष, निदेशक, उद्योगविभाग, ने गणमान्य अतिथियों और देशभर से आए निवेशकों एवं श्रोताओं का अभिवादन स्वागत सम्बोधन से किया। वहीं श्रीमती बन्दना प्रेयषी, सचिव, उद्योग विभाग, ने पहले सत्र के थीम बिहार में निवेश के अवसर विषय पर एक व्यापक प्रस्तुति दी। इसमें उन्होंने बिहार में उद्योग की अपार संभावनाओं पर प्रकाश डाला और सरकार द्वारा संचालित विभिन्न प्रोत्साहन नीतियों की विस्तृत जानकारी दी। सत्र को संबोधित करते हुए माननीय उप मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी ने कहा, माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी के नेतृत्व में बिहार में आज विभिन्न क्षेत्रों के विकास के लिए अनुकूल माहौल बना है। यहाँ हर क्षेत्र के विकास के लिए सभी आवश्यक संसाधन उपलब्ध है। हमारे यहाँ कृषि का इतिहास काफी समृद्ध रहा है। बिहार कई फसलों के उत्पादन के मामले में सर्वोच्च है जैसे की मक्का, मशरुम, मखाना इत्यादि। यह फूड प्रोसेसिंग उद्योग के लिए अनुकूल परिस्थिति उपलब्ध कराता है। साथ ही, हम उद्योगों के लिए भूमी की समस्या को भी बड़ी तत्परता से हल कर रहे हैं। इंफ्रास्ट्रचर और पर्यटन में भी बिहार अभूतपूर्व प्रगति कर रहा है। सत्र को संबोधित करते हुए माननीय उप मुख्यमंत्री श्री विजय कुमार सिन्हा ने कहा, बिहार के उद्योगों का भी एक समृद्ध इतिहास रहा है।

कैलिफोर्निया आमंड्स के साथ क्रिसमस को बनाएं और भी ज्यादा खुशनुमा और सेहतमंद

रायपुर। क्रिसमस अपने करीबियों और दोस्तों के साथ एक सुखद वक्त बिताने और बेहतरीन यादों को संजोने का मौका होता है। आइए, इस बार स्वाद से समझौता किए बिना ही सेहतमंद विकल्पों को चुनकर त्योहार का लुत्फ उठाएं। जब आप क्रिसमस के मीठे और पारंपरिक पकवान पकाएं तो कैलिफोर्निया आमंड्स की अच्छाइयों के साथ अपनी खुशियों को और बढ़ाएं। तरह-तरह से उपयोग की जाने वाली ये सामग्री आपके पंसदीदा पकवानों में क्रंच, लज्जत और पोषण लेकर आएगी। मशहूर कैलिफोर्निया आमंड्स, पोषण का भंडार है। इसमें प्रोटीन, हेल्दी फैट्स, फाइबर, मैग्नीशियम, जिंक और फॉस्फोरस जैसे 15 जरूरी पोषक तत्व हैं। केक से लेकर कुकीज़ तक, बादाम ड्राय फ्रूट्स का राजा है जो ना केवल स्वाद बढ़ाता है, बल्कि त्योहारों के पकवानों को पौष्टिक भी बनाता है। प्रमुख वैज्ञानिक जर्नल में प्रकाशित 200 से भी ज्यादा अध्ययनों में बताया गया है कि रोजाना मुट्ठीभर कैलिफोर्निया आमंड्स खाने से ब्लड शुगर को नियंत्रित करने, एलडीएल कोलेस्ट्रॉल को कम करने और दिल की सेहत को बेहतर बनाने में मदद मिलती है। बॉलीवुड अभिनेत्री सोहा अली खान कहती हैं मेरे लिए, क्रिसमस का मतलब होता है परिवार के साथ वक्त बिताना, रोशनी की जगमगाहट और अपनी बेटी के साथ खास केक बेक करना। खाना-पीना तो त्योहार का जरूरी हिस्सा होता है लेकिन मैं हमेशा इस बात का ध्यान रखती हूं कि मैं अपनी रेसिपीज में गुड़ और बादाम जैसी सेहतमंद चीजें डालूं। इससे ना केवल पकवानों का स्वाद बढ़ जाता है, बल्कि इससे बेवजह कुछ खाने की इच्छा नहीं होती और आपका पेट लंबे समय तक भरा रहता है। क्रिसमस के मौके पर मैं सबसे यही कहना चाहूंगी कि खाने की चीजें सोच-समझकर चुनें और सेहतमंद तरीके से त्योहार मनाएं।

एयरटेल वाईफाई के साथ मनोरंजन का नया दौर: अब ज़ी5 भी शामिल

रायपुर। भारत के प्रमुख दूरसंचार सेवा प्रदाताओं में से एक भारती एयरटेल (एयरटेल) ने आज ज़ी5, भारत के अग्रणी ओटीटी प्लेटफॉर्म के साथ साझेदारी की घोषणा की है, अब एयरटेल के वाईफाई ग्राहकों को रोमांचक डिजिटल कंटेंट उपलब्ध होगा। ?699 या उससे अधिक के प्लान्स पर सभी ग्राहकों को उनके एयरटेल वाईफाई प्लान के तहत ज़ी5 बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के उपलब्ध होगा। इस साझेदारी से, ज़ी5 का एक्सक्लूसिव कंटेंट, जिसमें ओरिजिनल शोज़, चार्टबस्टर टाइटल्स, ओटीटी मूवीज़ और विभिन्न भाषाओं में सीरीज़, अब एयरटेल वाईफाई पर दर्शकों के लिए उपलब्ध होगा। इससे उपभोक्ताओं को डिजिटल कंटेंट की एक विस्तृत कैटलॉग मिलेगा। लोकप्रिय टाइटल्स जैसे कि सैम बहादुर, आरआरआर, सिर्फ एक बंदा काफी है, मनोरथंगल, विक्टकवि, द क्रॉनिकल्स ऑफ अमरागीरी, अइंधाम वेधाम, ग्यारह ग्यारह और कई अन्य के साथ, एयरटेल वाईफाई ग्राहक अब 1.5 लाख+ घंटों के विशाल कंटेंट भंडार का आनंद ले सकते हैं। चीफ मार्केटिंग ऑफिसर और ईवीपी कस्टमर एक्सपीरियंस - भारती एयरटेल अमित त्रिपाठी ने कहा, साझेदारी एयरटेल के डीएनए का हिस्सा है और ज़ी5 के साथ साझेदारी करके हमें खुशी हो रही है। हमारे उपभोक्ताओं को एक विश्वस्तरीय डिजिटल कंटेंट इकोसिस्टम देने के हमारे प्रयास में यह एक महत्वपूर्ण कदम है। ज़ी5 की समृद्ध लाइब्रेरी हमारी कंटेंट पोर्टफोलियो को गहराई देती है और हमारे उपभोक्ताओं के अनुभव को और बेहतर बनाती है। हम अपने ग्राहकों को सर्वोत्तम अनुभव देने के लिए अपनी कंटेंट पोर्टफोलियो को मजबूत बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। मनीश कालरा, चीफबिजनेस ऑफिसर, ज़ी5 ने कहा, ज़ी5 पर, हमारी हमेशा यह कोशिश रही है कि उच्च-गुणवत्ता वाले मनोरंजन को लोकतांत्रिक तरीके से बनाया जाये, जिससे हमारी विविध कंटेंट लाइब्रेरी को दर्शकों तक पहुंचाया जा सके। एयरटेल के साथ यह सहयोग हमारे इस वादे को और मजबूत करता है कि हम दर्शकों को अलग-अलग शैलियों, भाषाओं और फॉर्मेट्स में एक सहज मनोरंजन अनुभव प्रदान करें।

संन्यास के बाद स्वदेश लौटे रविचंद्रन अश्विन

गृहराज्य चेन्नई में हुआ जोरदार स्वागत

नईदिल्ली(एजेंसी)। बीते बुधवार (18 दिसंबर) को रविचंद्रन अश्विन ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेकर सबको चौंका दिया।ऑस्ट्रेलिया दौरे पर गए अश्विन ने ब्रिसबेन क्रिकेट ग्राउंड में सीरीज के तीसरे टेस्ट के समापन के साथ ही संन्यास का ऐलान किया।बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2024-25 के बीच में ही क्रिकेट को अलविदा कहने के बाद अब अश्विन स्वदेश लौट चुके हैं।अश्विन के गृहराज्य चेन्नई में उनका जोरदार स्वागत हुआ। अश्विन के परिवार के सदस्य और उनके करीबी दोस्तों ने चेन्नई एयरपोर्ट पर स्वागत किया। उनकी वापसी पर प्रशंसकों ने फूल बरसाए और गाजे-बाजे के साथ इस दिग्गज खिलाड़ी का स्वागत किया।शुरुआत में, अश्विन ने एयरपोर्ट पर मीडिया को संबोधित करने से इनकार कर दिया था।एयरपोर्ट पर पत्रकारों के सवालों पर चुप रहे अश्विन ने अपने आवास के बाहर चुनिंदा पत्रकारों के समूह से बात की। अश्विन ने अपने बेमिसाल टेस्ट करियर में कई कीर्तिमान हासिल किए। उपलब्धियों से भरे टेस्ट करियर के बावजूद उन्हें टीम की कप्तानी करने का कभी मौका नहीं मिल सका।कप्तानी के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, मैं अब और नहीं कर सकता। मुझे इसका कोई पछतावा नहीं है। मैंने दूर से बहुत से लोगों को पछताते हुए देखा है, लेकिन मैं अपनी जिंदगी उस तरह नहीं जीना चाहता। अश्विन ने अपने भविष्य के बारे में स्पष्ट किया कि वह चेन्नई सुपरकिंग्स (सीएसके) की ओर से ज्यादा से ज्यादा खेलने की कोशिश करेंगे।उन्होंने कहा, मैं सीएसके के लिए खेलने जा रहा हूं और अगर मैं जितना हो सके उतने लंबे समय तक खेलने की कोशिश करता हूं तो इसमें चौंकाने वाली बात नहीं है। मुझे नहीं लगता कि अश्विन क्रिकेटर के रूप में समाप्त हो गया है। अश्विन ने अपने बेमिसाल टेस्ट क्रिकेट करियर का अंत 24.00 की उम्दा औसत से 537 विकेटों के साथ किया। उन्होंने 106 टेस्ट मैच की 200 पारियों में भारत के लिए गेंदबाजी की थी।उन्होंने अपने वनडे करियर में 116 मैच खेले, जिसमें 33.20 की औसत के साथ 156 विकेट लिए थे।उन्होंने अपने टी-20 अंतरराष्ट्रीय करियर में 65 मैच खेले, जिसमें 23.22 की औसत और 6.90 की इकॉनमी रेट के साथ 72 विकेट लिए थे।

विराट कोहली की मेलबर्न एयरपोर्ट पर हुई ऑस्ट्रेलिया मीडिया से भिड़ंत

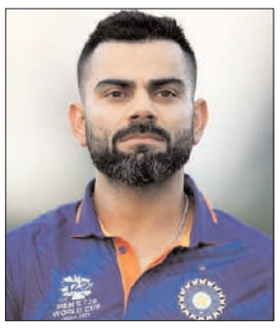

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम और ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम के बीच खेली जा रही बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी (2024-25) का चौथा टेस्ट मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर खेला जाना है।इस मुकाबले के लिए भारतीय टीम के मेलबर्न पहुंच चुकी है।इसी दौरान एयरपोर्ट पर स्टार भारतीय खिलाड़ी विराट कोहली ऑस्ट्रेलिया मीडिया से भिड़ गए।रिपोर्ट्स हैं कि वे उन्हें परिवार की फोटो लेने से मना कर रहे थे, लेकिन चैनल-7 के कैमरामैन नहीं माने। इस कारण कोहली को गुस्सा आ गया। कोहली को जवाब देते हुए ऑस्ट्रेलियन मीडिया ने कहा कि एयरपोर्ट पब्लिक की प्रॉपर्टी है। उन्होंने 4 अन्य पारियों में सिर्फ 26 रन बनाए हैं। कल की कोहली ने अचानक संन्यास का ऐलान लेने वाले रविचंद्रन अश्विन के लिए सोशल मीडिया पर लिखा, %मैंने आपके साथ 14 साल तक खेला और अब आप संन्यास ले रहे हैं तो मैं थोड़ा भावुक हो गया। आपके साथ खेले गए उन सभी सालों की यादें मेरे सामने आ गईं। मैंने आपके साथ हर पल का आनंद लिया है, आपका भारतीय टीम के लिए योगदान बेमिसाल है और आपको हमेशा क्रिकेट के दिग्गज के रूप में याद किया जाएगा। कोहली का फॉर्म अभी कुछ खास नहीं चल रहा है। ऐसे में चौथे टेस्ट में उनसे एक बड़ी पारी की उम्मीद होगी। है।बता दें किकोहली अपने परिवार को मीडिया से दूर रखना पसंद करते हैं। कई बार उन्हें अपने बच्चों की तस्वीर नहीं लेने की बातें कहते हुए देखा गया है।इस सीरीज में पर्थ टेस्ट के शतक को छोड़ दें तो उनका बल्ला कुछ खास कमाल नहीं कर पाया

हिमालयन तहर्स शीर्ष पर कायम; रांची रेंजर्स ने डिवीजन 3 की पहली जीत हासिल की

युवा कबड्डी सीरीज

कोयंबटूर(एजेंसी)। युवा कबड्डी सीरीज डिवीजन 3 ने करपगाम एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन में पांचवें दिन रोमांचक और दमदार प्रदर्शन का मिश्रण पेश किया। टेबल-टॉपर्स हिमालयन तहर्स ने देहरादून डायनामोज पर 27-26 से जीत दर्ज करके मजबूत वापसी की और शीर्ष पर अपना दबदबा बनाए रखा। डायनामोज ने खेल के अधिकांश समय तक बढ़त बनाए रखी, लेकिन अंतिम मिनट में लवप्रीत सैनी के शानदार टैकल ने तहर्स के पक्ष में रुख मोड़ दिया। लाल सिंह ने नौ रेड पॉइंट के साथ तहर्स के लिए रेडिंग प्रयास का नेतृत्व किया, जबकि दीपक लोहान ने डायनामोज के लिए नौ रेड पॉइंट बनाए, लेकिन उन्हें समर्थन की कमी खली। रांची रेंजर्स ने चंबल चैलेंजर्स पर 58-44 की शानदार जीत के साथ सीजन की अपनी पहली जीत दर्ज की। प्रिंस कुमार रॉय ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 21 रेड पॉइंट बनाए, जबकि राहुल गोप ने रेंजर्स के खाते में 17 रेड पॉइंट जोड़े। चैलेंजर्स के अजय मरावी और अभिषेक कुमार के शानदार प्रदर्शन के बावजूद, जिन्होंने क्रमश: 19 और 16 रेड पॉइंट बनाए, उनकी टीम रेंजर्स के लगातार हमले का सामना नहीं कर सकी। दिन की शुरुआत एक रोमांचक मैच से हुई, जिसमें लद्दाख वॉल्व्स ने देहरादून डायनामोज पर 41-36 से जीत हासिल की।

अंतिम 10 मिनट तक खेल बराबरी पर था, लेकिन वॉल्व्स ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बढ़त हासिल कर ली। अनिल कुमार के सुपर 10 और राजन सिंह मन्हास के शानदार ऑल-राउंड प्रदर्शन ने सात टैकल पॉइंट और चार रेड पॉइंट का योगदान देकर वॉल्व्स की जीत सुनिश्चित की। डायनामोज के लिए शुभम देशवाल के सुपर 10 और पंकज शर्मा के नौ टैकल पॉइंट के बावजूद, वे अंतिम क्षणों में पिछड़ गए।

दिन के दूसरे मैच में वास्को वाइपर्स ने इंदौर इनविंसिबल्स पर 45-35 से शानदार जीत दर्ज की। वाइपर्स के लिए प्रिंस ने 17 शानदार रेड पॉइंट बनाए, जबकि प्रियांशु और सचिन ने डिफेंस में हाई 5 हासिल किए।

लाईफ स्टाइल की सेल ऑफ द सीज़न में पाएं आकर्षक डिस्काउन्ट

रायपुर: नए ट्रैंड्ज़ के लिए भारत के अग्रणी फैशन डेस्टिनेशनल लाईफ स्टाइल ने इस सीज़न के लिए अपनी सेल की घोषणाकर दी है। लाईफस्टाइल में खरीददारी करने वाले उपभोक्ता टॉप फैशनब्राण्ड्स के नए स्टाइल्स पर 50 फीसदी तक छूट का लाभ उठा सकते हैं। 'लीव नथिंग' के दृष्टिकोण के साथ लाईफस्टाइल की सेल उपभोक्ताओं कोफैशन के बोल्ड विकल्प चुनने के लिए प्रेरित करती है, ताकि वे बिना कुछपीछे छोड़े अपने अनूठे स्टाइल को अपना सकें। इस अवसर पर लाईफस्टाइल ने टीवी, डिजिटल और प्रिंट के लिए एक कैंपेन का लॉन्च भी किया हैं, जो दर्शाता है कि कोई भी व्यक्ति खरीददारी करने से अपने आपको रोक नहीं पाएगा। इस विज्ञापन में शॉपिंग रैक को फैशन-फॉरवर्ड ट्विस्टके साथ पेश किया गया है, और लोग सबसे हॉट अपेरेल्स (परिधानों) कीखरीददारी के लिए जल्दबाज़ी करते दिखाई देते हैं। वे सेल के दौरान बिना कुछ पीछे छोड़े बडे डिस्काउन्ट्स का फायदा उठा लेना चाहते हैं। यह सेल फैशन प्रशंसकों को अपनी वार्डरोब को नया लुक देने का मौका देतीहै, वे व्यापक कलेक्शन में सीज़न के सबसे स्टाइलिश और आकर्षक पीसेज़अपने लिए चुन सकते हैं, इस कलेक्शन में पार्टी से लेकर कैज़ुअल औरफ्युज़न लुक्स तक हर मौके के लिए परिधान उपलब्ध हैं। इस माह त्योहारों के माहौल को देखते हुए बोल्ड, स्टाइलिश और चमकदार विकल्प आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं। जैट ब्लैक, शैंपेन और बरगंडी कलरमें शिमर, ग्लिटर, सिक्विन और प्लीटेड निट्स 'ग्लैम एडिट' बढ़ाते हैं, इसकलेक्शन में एलीगेंट ड्रैसेज़, टॉप और शीक मोनोक्रोमेटिक स्टाइल पेश किएगए हैं। आप मैटेलिक सिल्वर, वेलॉर, साटिन, राईनस्टोन निट्स के साथअपने इवनिंग लुक को आकर्षक बना सकते हैं। पुरूषों के कलेक्शन मेंरिफ्लेक्टिव जैकेट्स, टीज़, ट्रेंडी डेनिम, कार्गो, पार्टी ब्लेज़र और प्रिंटेड शर्ट्सशामिल हैं, जो हर मौके पर उनके स्टाइल को सबसे खास बना देंगे।

गोदरेज सिक्योरिटी सॉल्यूशंस ने आईएफएसईसी इंडिया 2024 में प्रदर्शित किए इनोवेटिव प्रॉडक्ट्स

नई दिल्ली(एजेंसी)। गोदरेज एंटरप्राइजेज ग्रुप की इकाई गोदरेज एंड बॉयस के सिक्योरिटी सॉल्यूशंस बिजनेस ने 12 से 14 दिसंबर तक नई दिल्ली में आयोजित दक्षिण एशिया के सबसे बड़े सुरक्षा एक्सपो आईएफएसईसी इंडिया 2024 में अपनी नवीनतम पेशकशों को प्रस्तुत किया। इस तरह कंपनी ने सिक्योरिटी संबंधी इनोवेशन की दुनिया में एक बार फिर बेंचमार्क कायम किया है। कंपनी ने अत्याधुनिक घरेलू और संस्थागत सुरक्षा समाधानों का एक मजबूत पोर्टफोलियो प्रदर्शित किया, जो उपयोगकर्ताओं के लिए सुरक्षा बढ़ाने और सुरक्षा अनुभव को फिर से परिभाषित करने की अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस अवसर पर टिप्पणी करते हुए, गोदरेज एंड बॉयस में सिक्योरिटी सॉल्यूशंस के एक्जीक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट और बिजनेस हैड पुष्कर गोखले ने कहा, ''बेहतर और उन्नत सुरक्षा समाधानों की बढ़ती मांग के साथ, 'आईएफएसईसी इंडिया' हमारे लिए अपनी विशेषज्ञता प्रदर्शित करने, अपने नवीनतम इनोवेशंस को प्रदर्शित करने और उद्योग के अग्रणी लोगों, भागीदारों और ग्राहकों से जुड़ने के लिए एक महत्वपूर्ण प्लेटफॉर्म है। गोदरेज में, हम आधुनिक उपभोक्ताओं की उभरती सुरक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने वाले ऐसे प्रॉडक्ट बनाने के लिए गहराई से प्रतिबद्ध हैं, जिनके जरिये ग्राहकों को मन की शांति और आत्मविश्वास हासिल हो सके। ऐसे सभी प्रॉडक्ट्स के निर्माण के दौरान हम अपने ग्राहकों की जरूरतों को केंद्र में रखते हैं। उपयोगकर्ता-केंद्रित उत्पादों के माध्यम से ग्राहकों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए एक सदी से अधिक के भरोसे के साथ, सुरक्षा समाधान व्यवसाय ने भारत और दुनिया भर के 50 से अधिक देशों में एक मजबूत उपस्थिति दर्ज की है।

कार्यालय प्रमुख अभियन्ता, लोक निर्माण विभाग, नवा रायपुर, अटल नगर

(केन्द्रीय निविदा प्रकोष्ठ) ई-प्रोक्यूरमेंट निविदा सूचना

Main Portal: https: // eproc.cgstate.gov.in

निम्नलिखित कार्य हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है :-

स. क्र.	सिस्टम निविदा क्रमांक / दिनांक	कार्य का नाम	कार्य की अनुमानित लागत (रुपये लाख में)
1	162770 प्रथम आमंत्रण 11.12.2024	नाबार्ड योजनांतर्गत जिला कबीरधाम के बानो से कान्हाभैरा मार्ग लंबाई 6.70 कि.मी. मजबूतीकरण एवं डामरीकरण का पुल पुलियासहित निर्माण कार्य।	538.13
2	162778 प्रथम आमंत्रण 11.12.2024	पाली से उतरदा मार्ग लंबाई 5.00 कि.मी. (वास्तविक लंबाई 1.80 कि.मी.) का शेष निर्माण कार्य।	225.49
3	162791 प्रथम आमंत्रण 12.12.2024	रायपुर स्थित सोनाखान भवन में खनिज ऑनलाईन परियोजना अंतर्गत आई.सी.सी. निर्माण हेतु आवश्यक सिविल वर्क सहित भवन का मरम्मत कार्य। जमा मद कार्य।	388.62
4	162800 द्वितीय आमंत्रण 12.12.2024	जिला गरियाबंद के अमलीपदर धुरवागुड़ी मार्ग के सूखा तेल नदी पर उच्चस्तरीय सेतु निर्माण कार्य का शेष कार्य।	494.86
5	162856 प्रथम आमंत्रण 13.12.2024	जिला दुर्ग के पतोरा से डंगनिया, मटिया पहुंच मार्ग लंबाई 2.05 कि.मी. का पुल पुलिया सहित निर्माण कार्य।	214.52

निविदा डाउनलोड करने की अंतिम तिथि सं.क्र. 04 दिनांक 30.12.2024 निर्धारित है एवं अन्य शेष निविदाओं के लिए दिनांक 03.01.2025 निर्धारित है। निविदा में भाग लेने की प्रक्रिया एवं निविदा के संबंध में विस्तृत जानकारी विभाग के उपरोक्त वेबसाईट में देखे जा सकते है।

मुख्य अभियंता
केन्द्रीय निविदा प्रकोष्ठ
कार्यालय प्रमुख अभियंता,
लोक निर्माण विभाग, नवा रायपुर अटल नगर

G-242504677/2

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शनिवार 21 दिसम्बर 2024

दो सिंचाई योजना के कार्यों के लिए 8.55 करोड़ रूपए स्वीकृत

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्य शासन ने बेमेतरा जिले के अंतर्गत दो सिंचाई परियोजनाओं के कार्यों के लिए 8 करोड़ 55 लाख 28 हजार रूपए स्वीकृत किए हैं। इन सिंचाई परियोजनाओं में विकासखंड बेरला की तांदुला सिंचाई परियोजना के कार्यों के लिए तीन करोड़ 92 लाख 6 हजार रूपए स्वीकृत किए गए हैं। इसी तरह से विकासखंड बेमेतरा की मोहनभट्ठा व्यपवर्तन के कार्यों को पूर्ण कराने 4 करोड़ 63 लाख 22 हजार रूपए स्वीकृत किए गए हैं।

संक्षिप्त समाचार

रेलवे स्टेशन में दो वाटर कूलर लगाएगा महाराष्ट्र मंडल

रायपुर (विश्व परिवार)। महाराष्ट्र मंडल नए साल में रायपुर रेलवे स्टेशन में निधि सिंघानिया की ओर से स्व. नारायण सिंघानिया स्मृति दो वाटर कूलर लगाएगा। अध्यक्ष अजय मधुकर काले ने बताया कि रायपुर रेलवे स्टेशन में दो वाटर कूलर लगाने की प्रारंभिक प्रक्रिया के अंतर्गत संभागीय रेलवे प्रबंधक (डीआरएम) संजीव कुमार से मुलाकात कर उन्हें इस संदर्भ में आवेदन दिया जा चुका है। उनकी ओर से भी सैद्धांतिक सहमति मिल चुकी है। वाटर कूलर लगाने की तकनीकी प्रक्रियाएं पूरी करने के बाद रेलवे की ओर से महाराष्ट्र मंडल को सूचित किया जाना है। उसके तत्काल बाद दो वाटर कूलर लगा दिए जाएंगे। ज्यादा संभावना इस बात की जताई गई है कि दोनों वाटर कूलर नए प्लेटफार्म नंबर सात पर लगाने की अनुमति मिल जाएगी।

कार श्रृंगार कार एसेसरीज शो रुम के 32 वर्ष सम्पूर्ण, 33वें वर्ष में प्रवेश

रायपुर (विश्व परिवार)। कार श्रृंगार कार एसेसरीज शो रुम के 32 वर्ष संपूर्ण होने पर और 33वें वर्ष में प्रवेश करने पर हमें अत्यंत गर्व और खुशी हो रही है। 32 वर्षों से हम आपकी कार को एक नया रूप देने में मदद कर रहे हैं। हमारे पास कार एसेसरीज की विस्तृत श्रृंखला है, जो आपकी कार को और भी आकर्षक और सुरक्षित बनाने में मदद करती है। हमारे ग्राहकों की संतुष्टि हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। हमारे अनुभवी और मित्रवत कर्मचारी आपकी कार की आवश्यकताओं को समझने में मदद करेंगे और आपको सबसे अच्छा समाधान प्रदान करेंगे। 33 वे वर्ष में प्रवेश करने पर, हम आपको और भी बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारे नए उत्पादों और सेवाओं के बारे में जानने के लिए हमारे साथ जुड़े रहें। हमारी सफलता का फायदा बहुत से नक़ल चोर उठा रहे जो हमारे नाम का उपयोग कर हमारे ग्राहको को गुमराह कर रहे कृपया उनसे बचें हमारी कहीं अन्य ब्रांच नहीं है कार श्रृंगार सिर्फ़ और सिर्फ़ रायपुर में जीत टावर राजकुमार कॉलेज के सामने जी. ई. रोड पर ही है।

उषा किरण शर्मा (चचेड़ी वाले) का निधन

रायपुर (विश्व परिवार)। अग्रोहा कॉलोनी, रायपुरा निवासी उषा किरण शर्मा (चचेड़ी वाले) का गुरुवार रात्रि निधन हो गया। जिनकी अंतिम यात्रा निज निवास अग्रोहा कॉलोनी से महादेव घाट के लिए सुबह 10 बजे निकली। वे स्व. डी.आर तिवारी की पत्नी, वरिष्ठ पत्रकार हरीश तिवारी, कल्याणी पांडे, कात्यायनी तिवारी, गिरीश तिवारी की माता व देवांश तिवारी, दक्षेस तिवारी की दादी थी।

रायपुर रेल मंडल द्वारा नवा रायपुर में नया गति शक्ति रेल मल्टी मॉडल कार्गो टर्मिनल राष्ट्र को समर्पित

रायपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर रेल मंडल में आज दिनांक 20 दिसंबर 2024 को नवा रायपुर से नया हिंदुस्तान पैट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड का नया गति शक्ति रेल मल्टी मॉडल कार्गो टर्मिनल का शुभारंभ किया गया।

भारतीय रेलवे द्वारा गति- शक्ति मल्टी मॉडल कार्गो टर्मिनल (जीसीटी) नीति का उद्देश्य रेल कार्गो को संभालने के लिए अतिरिक्त टर्मिनलों के विकास में उद्योग से निवेश को बढ़ावा देना है। ये टर्मिनल रेल द्वारा परिवहन के लिए माल वस्तुओं की हैंडलिंग को आसान बनाएंगे तथा सुरक्षित परिवहन प्रदान करने के लिए उन्नत सुविधाएं प्रदान करेंगे। नवा रायपुर से गति शक्ति रेल मल्टी मॉडल कार्गो टर्मिनल को हिंदुस्तान पैट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड के सौजन्य से निर्मित किया गया है।

नवा रायपुर से हिंदुस्तान पैट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड का नया गति शक्ति रेल मल्टी मॉडल कार्गो टर्मिनल का शुभारंभ

नवा रायपुर में गति शक्ति रेल मल्टी मॉडल कार्गो टर्मिनल खुलने से हिंदुस्तान पैट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड की पेट्रोलियम वैगन के रैक की आवक जावक हैंडलिंग की जायेगी जिससे रेल परिवहन में बढोतरी होगी एवं रायपुर रेल मंडल को रेल राजस्व की प्राप्ति होगी।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार सहित वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्री मनीष अग्रवाल, मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री राकेश सिंह सहित रायपुर रेल मंडल के संबंधित अधिकारी हिंदुस्तान पैट्रोलियम कॉरपोरेशन के सीनियर मैनेजर अमित कुमार, डीजीएम एम. श्रीनिवास राव उपस्थित रहे।

आम जन के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए निस्वार्थ भाव से काम करें अधिकारी और चिकित्सक : स्वास्थ्य मंत्री

स्वास्थ्य विभाग की दो दिवसीय राज्य स्तरीय समीक्षा बैठक में शामिल हुए श्याम बिहारी जायसवाल

रायपुर (विश्व परिवार)। स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल शुक्रवार को सिविल लाइन स्थित सर्किट हाउस के आडिटोरियम में आयोजित स्वास्थ्य विभाग के राज्य स्तरीय समीक्षा बैठक में शामिल हुए। शुक्रवार को शुरू हुई ये समीक्षा बैठक दो दिनों तक चलेगी। समीक्षा बैठक के पहले दिन स्वास्थ्य मंत्री ने विभाग के कार्यों की विस्तार से समीक्षा की। इस दौरान स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को संबोधित करते हुए श्री जायसवाल ने कहा कि सभी अधिकारी एवं चिकित्सक आम जन के स्वास्थ्य को देखते हुए निस्वार्थ भाव से काम करें।

उन्होंने कहा कि राज्य स्तर पर मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के निर्देश पर स्वास्थ्य सुविधाओं में लगातार विस्तार करने का काम किया जा रहा है। बिलासपुर मे 200 करोड़ की लागत से बनने वाले सुपर स्पेशलिटी अस्पताल, रायपुर के मेकाहारा में 700 बिस्तरीय एकीकृत नवीन अस्पताल भवन का 231 करोड़ रूपए का ई टेंडर, चार नवीन मेडिकल कालेजों के लिए 1 हजार 20 करोड़ का ई टेंडर, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के माध्यम से एक वर्ष के भीतर 8 सौ से ज्यादा चिकित्सा अधिकारियों, विशेषज्ञ चिकित्सकों एवं पैरामेडिकल स्टाफ की भर्ती, राज्य में एमबीबीएस की हिन्दी में पढ़ाई जैसे निर्णय से राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूती मिली है। श्री जायसवाल ने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को योजनाओं के बेहतर संचालन एवं क्रियान्वयन के जरूरी निर्देश देते हुए कहा कि आम जन तक स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ सुनिश्चित होना चाहिए। विभागीय समीक्षा बैठक में वरिष्ठ विभागीय अधिकारियों के साथ ही जिलों से आए अधिकारी भी उपस्थित थे।

नए नाम और फॉर्मेट में आयोजित होगी सीपीएल टी20 क्रिकेट लीग

रायपुर (विश्व परिवार)। CPL -T20 छत्तीसगढ़ प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता का तीसरा संस्करण प्रदेश के बड़े स्टेडियम में फरवरी माह में आयोजित किया जाना प्रस्तावित है, जिसके लिए खिलाड़ियों का ट्रायल्स 22 दिसंबर को रियाज क्रिकेट ग्राउंड सरीखेड़ी रायपुर में आयोजित किया जा रहा है। वीर स्पोर्ट्स क्लब के अध्यक्ष प्रवीण जैन ने जानकारी देते हुए बतलाया है कि प्रदेश को अपनी पहली अधिकृत लीग प्रतियोगिता मिल चुकी है, जिसके बाद एक जैसे नाम से प्रतियोगिता करने के पक्ष में हम नहीं है, जिसके बाद हमनें छत्तीसगढ़ क्रिकेट संघ से सीपीएल टी20 प्रतियोगिता के लिए गाइडलाइन मांगी थी, संघ द्वारा भेजी गई गाइडलाइन के अनुसार प्रीमियर लीग, टी20 लीग नाम से तथा टी20 फॉर्मेट में कोई अन्य प्रतियोगिता प्रदेश में आयोजित नहीं की जा सकती, जिसके बाद क्लब के पदाधिकारियों ने निर्णय लिया है कि प्रतियोगिता का नाम छत्तीसगढ़ प्रीमियर लीग से बदल कर छत्तीसगढ़ चैंपियंस लीग किया जायेगा तथा टी20 फॉर्मेट को बदल कर इसे 21-21 ओवरों के नए फॉर्मेट में आयोजित कराई जायेगी। प्रवीण जैन ने बतलाया कि छत्तीसगढ़ प्रदेश में ऐसे हजारों प्रतिभाशाली खिलाड़ी हैं जो ग्रामीण, आदिवासी, पिछड़े क्षेत्रों एवं छोटे कस्बों में रहते हैं इन खिलाड़ियों को बोर्ड मैच खेलने का अवसर नहीं मिल पाता, ऐसे महिला एवं पुरुष वर्ग के खिलाड़ी जो बोर्ड मैचेज नहीं खेलते उन्हें प्रशिक्षित कर पेशेवर क्रिकेट प्रतियोगिताओं के रूप में बड़ा मंच प्रदान करना हमारा लक्ष्य है। छत्तीसगढ़ चैंपियंस लीग के चेयरमैन प्रवीण झा ने बतलाया कि इस प्रतियोगिता में कई आकर्षक बदलाव किए जा रहे हैं जिससे प्रतियोगिता को रोचक और शानदार बनाया जा सके, उन्होंने बतलाया कि इस प्रतियोगिता में प्लेइंग 11 के साथ 1 इंपैक्ट प्लेयर भी खेलेगा जो 1 ओवर अनिवार्य रूप से गेंदबाजी करेगा, साथ ही इंपैक्ट प्लेयर को बल्लेबाजी और क्षेत्ररक्षण का अधिकार भी होगा। इसके अतिरिक्त प्रत्येक टीम के लिए एक मार्की प्लेयर का भी चयन किया गया है।

युवा महोत्सव मड़ई 2024 : गीत, नृत्य एवं नाटिकाओं ने बटोरीं दर्शकों की तालियां

एकांकी, एकल अभिनय, रंगोली एवं पेंटिंग ने मन मोह लिया

रायपुर (विश्व परिवार)। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर में आयोजित सांस्कृतिक युवा महोत्सव मड़ई 2024 के दूसरे दिन आज यहां कृषि महाविद्यालय रायपुर के विभिन्न सभागृहों एवं प्रेक्षागृहों में विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा एकल अभिनय, तात्कालिक भाषण, ऑन दी स्पॉट पेंटिंग, एकांकी, समूह गायन, कोलाज मेकिंग, मिमिक्री, भाषण, समूह गायन (भारतीय), लोक एवं आदिवासी नृत्य आदि प्रतियोगिताओं में आकर्षक एवं भावप्रवण प्रस्तुतियां दी गई।

इन विभिन्न प्रतियोगिताओं के तहत दी गई प्रस्तुतियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण, कृषि विकास, प्रौद्योगिकी विकास, नारी सशक्तिकरण, दहेज उन्मूलन, भ्रष्टाचार उन्मूलन, असमानता एवं अस्पृश्यता निवारण जैसे संवेदनशील सामाजिक मुद्दों को उकेरा गया। युवा कलाकारों ने अपनी संप्रेषणीयता, भावाभिनय, संवाद कौशल, रेखांकन कौशल आदि के माध्यम से दर्शकों को दिल जीत लिया तथा खूब तालियां बटोरीं। मड़ई 2024 के अंतर्गत आयोजित समूह नृत्यों की रंगा-रंग प्रस्तुतियों ने लोगों का मन मोह लिया। विभिन्न प्रतिभागियों ने आकर्षक रंगोली, मेहंदी, पोस्टर मेकिंग आदि के माध्यम से अपने भावों को रूपाकार दिया। इस अवसर पर इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. संजय शर्मा, सांस्कृतिक प्रभारी एवं अयोजन सचिव डॉ. बी.पी. कतलम विभिन्न प्रतियोगिताओं के प्रभारी तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं के निर्णायकगण उपस्थित थे।

विधायक भावना बोहरा ने विधानसभा में आदिवासियों को वन आवासीय पट्टा, किसानों को कृषि पम्प व पीएम फसल बिमा योजना सहित नई औद्योगिक नीति के संबंध में पूछा प्रश्न

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ विधानसभा शीतकालीन सत्र के अंतिम दिन पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने आदिवासी परिवारों को वन आवासीय पट्टा, किसानों को कृषि पम्प एवं प्रधानमंत्री फसल बिमा योजना साथी छत्तीसगढ़ की नई औद्योगिक नीति के संबंध में प्रश्न पूछा। भावना बोहरा ने कहा कि हमारे आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी परिवारों के कल्याण हेतु भाजपा सरकार प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है वहीं कृषकों को हर सुविधा उपलब्ध हो और योजनाओं का लाभ उन्हें निरन्तर मिलता रहे इसके लिए विधानसभा में इन प्रश्नों को मैनें प्रमुखता से रखा। इसके साथ ही छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने एवं व्यवसायिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए हमारी सरकार ने नई औद्योगिक नीति बनाई है जिसके संबंध में अधिक से अधिक जानकारी हमारे व्यापारी भाईओं को मिल सके इसके संबंध में भी आज विधानसभा में मैनें प्रश्न पूछा।

छत्तीसगढ़ में नई औद्योगिक नीति के संबंध में प्रश्न करते हुए पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने पूछा कि छत्तीसगढ़ औद्योगिक नीति 2024-2030 में B2B सेक्टर के लिए नेट एसजीएसटी प्रतिपूर्ति की पॉलिसी क्या है? इसके साथ ही नई औद्योगिक नीति के तहत स्थापित किये जा रहे औद्योगिक पार्क, इंजीनियरिंग पार्क, आई.टी. पार्क, फूड पार्क आदि जिनके उत्पादों का उपयोग पूँजीगत स्थापना के लिए BwB सेक्टर के लिए किया जायेगा, उनके लिए नेट एसजीएसटी प्रतिपूर्ति की पॉलिसी क्या है? वित्त मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी जी ने बताया की छत्तीसगढ़ औद्योगिक विकास नीति 2024-30 के अंतर्गत राज्य में स्थापित होने वाले उद्यमों को नेट एसजीएसटी प्रतिपूर्ति दिये जाने का प्रावधान किया गया है। B2B का प्रावधान क्रियान्वयन नियमावली में उपलब्ध होता है। क्रियान्वयन नियमावली तैयार कर जारी किये जाने की प्रक्रिया में है। नई औद्योगिक नीति के तहत स्थापित किये जा रहे पात्र उद्यमों/सेवा उद्यमों को नियमानुसार नेट एसजीएसटी प्रतिपूर्ति की पात्रता होगी। B2B का प्रावधान क्रियान्वयन नियमावली में उपलब्ध होता है। क्रियान्वयन नियमावली तैयार कर जारी किये जाने की प्रक्रिया में है।

भावना बोहरा ने आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में निवासरत परिवारों के हित के लिए प्रश्न करते हुए कहा कि वन अधिकार अधिनियम, 2006 के तहत कबीरधाम जिले अंतर्गत विगत 03 वर्ष में वर्ष 2022-23 से नवम्बर, 2024 तक कुल कितने आदिवासी हितग्राहियों को वन आवासीय पट्टा प्रदान किया गया है? सीमांकन हेतु कितने प्रकरण लम्बित हैं और उनका निराकरण कब तक होगा? फर्जी पट्टा एवं अवैध वन आवासीय कब्जे से सम्बन्धित कितने प्रकरण उनमें लिप्त दोषियों एवं भ्रष्ट कर्मचारियों पर कार्यवाही और वन भूमि अहस्तांतरणीय के संबंध में जानकारी मांगी। जिसके प्रतिउत्तर में आदिमजाति विकास मंत्री श्री रामविचार नेताम जी ने बताया कि उक्त अवधि में आवासीय प्रयोजन हेतु वितरित वन अधिकार पत्रों की संख्या शुन्य है तथा उस अवधि में आवासीय प्रयोजन हेतु फर्जी एवं अवैध कब्जे संबंधी कोई भी प्रकरण प्राप्त नहीं हुए हैं। वन अधिकार अधिनियम, 2006 के अनुसार व्यक्तिगत वन अधिकार हेतु वन भूमि प्राप्त कोई भी अधिकार वंशागत होगा किन्तु संक्रमणीय या अंतरणीय नहीं होगा। जिला कबीरधाम अंतर्गत वनभूमि के अवैध नामांतरण एवं हस्तांतरण के कोई भी प्रकरण प्राप्त नहीं हुए है।

कृषि व कृषकों के सन्दर्भ में भावना बोहरा ने पूछा कि पंडरिया विधानसभा क्षेत्र में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना अंतर्गत खरीफ वर्ष 2023 एवं 2024 में, नवम्बर, 2024 तक किन-किन गांव के किसानों को प्रधानमंत्री फसल बीमा का लाभ मिला है? क्या बीमा से लाभान्वित गांव के किसानों से बीमा राशि प्राप्त नहीं होने की शिकायत प्राप्त हुई है और प्राप्त शिकायतों पर क्या कार्यवाही की गई ? जिसके प्रतिउत्तर में कृषि एवं आदिमजाति विकास मंत्री श्री रामविचार नेताम ने बताया कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना अंतर्गत जानकारियों का संधारण तहसीलवार किया जाता है।

नगर पालिक निगम रायपुर में दिवंगत कर्मचारियों के आश्रित अभ्यर्थियो को अनुकंपा नियुक्ति प्रदान करने दस्तावेजो का परीक्षण 23 दिसम्बर को

रायपुर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम रायपुर में सेवाकाल के दौरान दिवंगत कर्मचारियों के आश्रित अभ्यर्थियों को अनुकंपा नियुक्ति प्रदान करने के संबंध में अभ्यर्थियों के अनुकंपा नियुक्ति के प्रकरण में संलग्न समस्त दस्तावेजो का परीक्षण रायपुर नगर निगम मुख्यालय स्थित तृतीय तल के सभा कक्ष में दिनांक 23 दिसम्बर 2024 सोमवार को 11 बजे से किया जायेगा।

नगर निगम सामान्य प्रशासन विभाग अपर आयुक्त श्रीमती कृष्णा खटीक ने नगर निगम रायपुर में सेवाकाल के दौरान दिवंगत कर्मचारियों के आश्रित अभ्यर्थियों से समस्त दस्तावेजो की मूल प्रति एवं 01 छायाप्रति स्वप्रमाणित लेकर निर्धारित समयावधि में उपस्थित होने एवं परिवार में कोई सदस्य शासकीय सेवा में नहीं होने का 100 रुपए के स्टाम्प में शपथ पत्र भी साथ में लेकर आना सुनिश्चित करने का अनुरोध किया है।

राजकुमार कॉलेज रायपुर ने वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह-2024 का किया आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। उत्कृष्टता की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए, राजकुमार कॉलेज, रायपुर, छत्तीसगढ़ ने वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह 2024 के पहले दिन का आयोजन 20 दिसंबर को बड़े उत्साह के साथ किया। कार्यक्रम का आयोजन जशपुर हॉल में किया गया। कार्यक्रम में राजा श्री त्रिबिक्रम चंद्र देबऑफ़ बरम्बा, राजकुमार कॉलेज प्रबंध समिति के अध्यक्ष, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

कार्यक्रम की शुरुआत ध्वजारोहण और गार्ड ऑफ ऑनर से हुई, जिसे एनसीसी कैडेट्स ने प्रस्तुत किया। इसके बादगणमान्य व्यक्ति जशपुरहॉल पहुँचे, जहाँ कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत देशभक्ति गीत 'सारे जहां से अच्छा' से हुई। राजकुमार कॉलेज के प्राचार्य, लेफ्टिनेंट कर्नल अविनाश सिंह (सेवानिवृत्त) ने अपने स्वागत भाषण में विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें उन्होंने विद्यालय की उत्कृष्ट अकादमिक उपलब्धियों और छात्रों की बहुमुखी सफलताओं को रेखांकित किया।

विद्यार्थियों की कुछ मुख्य उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं- धैर्य लूनिया, हेड बॉय को 'नांदगाँव चैलेंज शील्ड' और 'बेस्ट ऑल राउंड बॉय' के लिए प्रिंसिपल कप से सम्मानित किया गया। 'गुड कंडक्ट' के लिए 'वॉमैक मेडल' अनुकल्प अग्रवाल (कक्षा XII) को प्रदान किया गया। 'बेस्ट स्कॉलर' (सीनियर स्कूल) के लिए 'गवर्नर ऑफ ओडिशा कप' गोविंद खेतपाल (कक्षा XII) और तुष्टि अग्रवाल (कक्षा XII) ने संयुक्त रूप से जीता। 'श्रीमती रानी शशि प्रभा देवी ऑफ कवर्धा' का 'बेस्ट इंग्लिश डिबेटर' पुरस्कार आरुषि अग्रवाल (कक्षा XII) को मिला। 'बेस्ट हिंदी डिबेटर' के लिए 'श्री देवी सिंह चौहान कप' पृथ्वी राज चौहान को दिया गया। 'बेस्ट कंडक्ट' (बालक वर्ग) के लिए आशीष चौधरी मेमोरियल ट्रॉफी सृष्टि अग्रवाल (कक्षा XII) और अदिति सिंह ठाकुर (कक्षा XII) को संयुक्त रूप से मिली। इंटर सेट क्विज मेंसर्वश्रेष्ठ टीम के लिए, श्री देवी प्रसाद मिश्रा द्वारा प्रदत्त 'गवर्नर ऑफ ओडिशा कप' पृथ्वी राज चौहान (कक्षा XII) और राहुल मोदी (कक्षा XII) ने संयुक्त रूप से जीता।

अपनी रिपोर्ट में राजकुमार कॉलेज के प्राचार्य लेफ्टिनेंट कर्नल अविनाश सिंह (सेवानिवृत्त)ने विद्यालय की अकादमिक उत्कृष्टता और छात्रों के समग्र विकास के प्रति प्रतिबद्धता पर जोर दिया। उन्होंने विद्यालयीनगतिविधियों की जानकारी देते हुए विभिन्न अंतर-विद्यालय प्रतियोगिताओं में छात्रों की प्रभावशाली उपलब्धियों पर भी प्रकाश डाला।

वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह 2024 के पहले दिन के आयोजन के द्वितीय चरण में विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। भारतीय खिलाड़ियों पर आधारित मनमोहक प्रस्तुति से सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत हुई। शस्योत्सव, अप्प दीपो भव, नवरस पर आधारित नृत्य, ठाकुर रवींद्रनाथ द्वारा दिखाए गए पथ का अवलोकन, दक्षिण भारतीय संस्कृति, परंपराओं का उत्सव, एकल शास्त्रीय गीत आदि सभी प्रस्तुतियों को दर्शकों और सभी गणमान्य व्यक्तियों ने बेहद सराहा। शाम को विद्यालय के पूर्व व वर्तमान छात्रों के बीच सौहार्द्रपूर्ण हॉकी मैच का आयोजन किया गया। विद्यालय के हेड बॉय धैर्य लूनिया और हेड गर्ल अनुभूति लूनावत द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया। विद्यालय के उप-प्राचार्य ने जानकारी दी कि वार्षिक उत्सव का द्वितीय चरण 22 दिसंबर को आयोजित किया जाएगा।

आरएसएसडीआई का वार्षिक राज्य स्तरीय सम्मेलन रायपुर में 21 व 22 दिसंबर को

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतवर्ष की 50 वर्षों से ज्यादा पुरानी सबसे बड़ी डायबिटीज में रिसर्च और चिकित्सकों की शिक्षाके लिए अग्रणी संस्था आरएसएसडीआई (Research Society for the Study of Diabetes in India) का वार्षिक सम्मेलन रायपुर में 21 और 22 दिसंबर को परंपरा गार्डन वीआईपी रोड पर आयोजित हो रहा है।

RSSDI (भारत में मधुमेह के अध्ययन के लिए अनुसंधान सोसायटी) एशिया में मधुमेह से पीड़ित लोगों की देखभाल के लिए समर्पित चिकित्सकों का सबसे बड़ा संघ है। RSSDI का उद्देश्य भारत में मधुमेह अनुसंधान का संचालन और सुविधा प्रदान करना है, जिसका मधुमेह नैदानिक अभ्यास और स्थिति की रोकथाम और प्रबंधन पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यह लगभग 12000 से अधिक सदस्यों और साढे चार सौ से अधिक जिला स्तरीय कोऑर्डिनेटर की सम्मिलित संस्थान है।

आरएसएसडीआई की राजकीय इकाई के अध्यक्ष प्रोफेसर डॉक्टर स्मित श्रीवास्तवने बताया कि यह संस्था साल भर राज्य में अपने 400 से अधिक सदस्यों के साथ निरंतर डायबिटीज के रोगियों का निदान और उपचार के लिए समय-समय पर संगोष्ठी, सम्मेलनऔर कार्यशालाओं का आयोजन करती है। डॉ स्मित श्रीवास्तव ने यह भी बताया की इस सम्मेलन में देश भर के 17 डायबिटीज के एक्सपर्ट और राज्य के 41 विशेषज्ञ अपने व्याख्यान और कार्यशालाओं के माध्यम से राज्य के लगभग 350 भागीदार चिकित्सकों को शिक्षित और प्रशिक्षित करेंगे।

इस सम्मेलन के साइंटिफिक अध्यक्ष प्रोफेसर डॉक्टर संजय वर्मा ने बताया की दो दिवसीय सम्मेलन मेंमधुमेह पर चर्चा करने के लिएअतिविशिष्ट विषयों का चयन कर एक ऐसा कार्यक्रम बनाया गया है जो गर्भस्थ शिशु में मधुमेह की समस्या, निदानऔर उपचार से लेकर जर अवस्था में आने वाली मधुमेह से उत्पन्न जटिलताएं जैसे किडनी, नसों की और हृदय की संवृति को रखा गया है। अजातिक मधुमेह, मधुमेह उत्क्रमण, प्रीडायबिटीज जैसे विषयों पर चर्चा होगी जिसके द्वारा ऐसी असाधारण मधुमेह और मधुमेह से बिना दवा के निजात पाने की नवीनतम विधियो पर परिचर्चा होगी।

ऑर्गेनाइजिंग सेक्रेट्री डॉ अरुण केडिया ने बताया कि इस सम्मेलन में आरएसएसडीआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ विजय विश्वनाथन एवं सेक्रेटरी डॉक्टर संजय अग्रवाल, कोषाध्यक्ष डॉ जुगल किशोर शर्मा के साथभी सम्मिलित होंगे। उन्होंने प्रसन्नता के साथ यह भी उल्लेखित कियाकि इस वर्ष से संस्था डॉक्टर क्रांति कुमार श्रीवास्तव ओरेशन अवार्ड प्रारंभ करने जा रही है जो डायबिटीज की रिसर्च में अग्रणी विषय पर अति विशिष्ट विशेषज्ञ को उसके व्याख्यान के लिएपुरस्कृत किया जाएगा इस वर्ष यह पुरस्कार चेन्नई के डॉक्टर विजय विश्वनाथन को दिया जा रहा है उनकी मधुमेह में अग्रणी रिसर्च की सम्मेलन में रिजर्वेशन अवार्ड व्याख्यान के द्वारा दौरान प्रस्तुति होगी।

कार्यकारणी के सदस्य डॉ फिरोज़ मेमन ने जाहिर किया की इसके साथ ही पूर्व कुलपति प्रोफेसर डॉक्टर जी बी गुप्ता एवं संचालक चिकित्सा शिक्षा प्रोफेसर डॉक्टर यू एस पैंकरा की अध्यक्षता में उद्घाटन समारोह के दौरान डायबिटीज क्विज का पारितोषिक वितरण किया जाएगा साथ ही डॉक्टर राका शिवहरे की आगामी वर्ष की टीम का शपथ ग्रहण समारोह भी संपन्न होगा। कार्यकारिणी के सदस्य डॉक्टर अनुराग अग्रवाल और डॉ पंकज मोटघरे ने बताया की पूर्व के वर्षों में डॉक्टर प्रवीण काल्विट, डॉक्टर अभिजीत रॉयज़ादा एवं डॉक्टर पवन अग्रवाल के सफल प्रयासों के कारण इस वर्ष के आरएसएसडीआई सम्मेलन में राज्य भर के चिकित्सकों में सम्मिलित होने के लिए कौतूहल और उत्साह बढ़ा हुआ हैऔर इस वर्ष की कार्यकारिणी द्वारा मधुमेह पर चर्चा के लिए ऐसे विषयों का चयन किया गया है जो दुरांचल में रह रहे चिकित्सकों की दैनिक दुविधाओं को सरल कर सके, उन्हें डायबिटीज केउपचार के अलावा, जनसाधारण में इसके रोकथाम में सहायक सिद्ध हो।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354